HINDI

BEYOND GOOD AND EVIL

BOOK BY FRIEDRICH NIETZSCHE

Translation By Shiv Kumar

Hindi

BEYOND GOOD AND EVIL

Book by

Friedrich Nietzsche

Translation By Shivcharan Mahto

CHAPTER.

i. Truth, Dogmatism, and Philosophical Foundations

नितसे कहते हैं कि पुराने दार्शनिकों को कुछ नहीं पता था। वे सब अनाड़ी थे। वे बहुत सीरियस बन रहे थे। इसलिए उनसे बड़ी गलती हो गई। मान लीजिए सच्चाई एक औरत है। ट्रुथ एक औरत है। उन पुराने लोगों को औरत से बात करना आता ही नहीं था। वे डंडा लेकर उसके पीछे पड़ गए। नतीजा सच्चाई उनसे दूर भाग गई। अब उनकी पुरानी जिद्दी सोच दम तोड़ रही है। दुनिया ने आपको गुड और इविल के नाम पर उल्लू बनाया है। यह सब कमजोर लोगों का ड्रामा है। नितशय इस सिस्टम को लात मारने आए हैं। आइए उनकी इस किताब बिय्ड गुड एंड इविल को लाइन बाय लाइन समझने की कोशिश करते हैं।

मान लो सच्चाई एक औरत है तो फिर क्या? क्या ऐसा नहीं लगता कि ये सारे पुराने फिलॉसोफर्स जो अपनी बातों पर अड़े रहते थे। डॉग्मैटिस्ट थे। वे औरतों को कभी समझ ही ना पाए। उन्होंने सच्चाई का पीछा इतने भद्दे और अजीब तरीके से किया जैसे कोई अनाड़ी किसी औरत को लुभाने की कोशिश कर रहा हो। जाहिर है वह औरत उनके हाथ कभी नहीं आई और आज उनकी यह जिद्दी सोच बहुत मायूस खड़ी है। अगर वह खड़ी भी है तो कुछ लोग तो मजाक उड़ाते हुए कहते हैं कि वह गिर चुकी है। सारी जिद्दी सोच सारी डॉगमा जमीन पर पड़ी अपनी आखिरी सांसे गिन रही है। लेकिन सच
बोलूं तो एक उम्मीद है। पुराने सोचने वालों का यह अडियल अंदाज, यह डॉग्मेटाइजिंग शायद सिर्फ बच्चों जैसी बचकानी हरकत थी। शायद अब वह समय आ गया है जब हमें समझ आएगा कि इन बड़ी-बड़ी बातों की नींव कितनी कमजोर थी। शायद यह सब बस उस पुराने अंधविश्वास थे। जैसे आत्मा वाली बेकार बात या शायद यह बस शब्दों का खेल था या ग्रामर का कोई धोखा। या फिर इंसान की अपनी

मामूली बातों को बढ़ा चढ़ाकर बोलना। इन अियल लोगों की सोच इन डॉग्मेटिस्ट्स की सोच शायद भविष्य के लिए एक वादा थी। जैसे पुराने जमाने में ज्योतिष एस्ट्रोलॉजी थी। उस पर असली
विज्ञान एक्चुअल साइंस से भी ज्यादा मेहनत और पैसा खर्च किया गया था। एशिया और मिस्र के उन्हीं बड़ी-बड़ी दावों की वजह से आज हमें शानदार इमारतें देखने को मिलती है। ऐसा लगता है कि इंसान के दिल में जगह बनाने के लिए हर बड़ी बात को पहले [संगीत] एक डरावने मजाक की तरह दुनिया में घूमना पड़ता है। पुरानी जिद्दी सोच, पुरानी डॉग्मेटिक फिलॉसफी भी ऐसा ही एक मजाक थी। जैसे एशिया में वेदांत और यूरोप में प्लेटो की सोच। हमें इनका एहसान मानना चाहिए। भले ही यह बहुत बड़ी गलती थी। सबसे खतरनाक गलती थी प्लेटो का प्योर स्पिरिट। प्लेटो की
पवित्र आत्मा और गुड इन इटसेल्फ। परम अच्छाई का आविष्कार करना। उसका इन्वेंशन। लेकिन अब जब हमने इसे पार कर लिया है और यूरोप इस डरावने सपने से आजाद हो गया है। तो हम लोग जिनका काम जागते रहना है उस सारी ताकत के वारिस बन गए हैं जो इस लड़ाई से मिली है। आत्मा और अच्छाई के बारे में प्लेटो की बातें सच्चाई को उल्टा करने जैसा था। यह जीवन के असली नजरिए असली पर्सपेक्टिव को मानने से इंकार करना था। एक डॉक्टर की तरह पूछा जा सकता है [संगीत] प्लेटो को ऐसी बीमारी कैसे लगी? क्या उस दुष्ट सोक्रेटीस ने उसे बिगाड़ दिया था?
ईसाई धर्म के हजारों सालों के जुल्म के खिलाफ लड़ाई ने यूरोप में एक जबरदस्त मानसिक तनाव पैदा [संगीत] कर दिया। टेंशन ऑफ सोल। याद रहे ईसाई धर्म आम लोगों के लिए प्लेटो की ही सोच है। अब जब कमान इतनी तन चुकी है तो हम बहुत दूर के लक्ष्य पर निशाना साध सकते हैं। यूरोप के लोग इस तनाव से इस टेंशन से परेशान है। उन्होंने दो बार इस कमान को ढीला करने की कोशिश की। एक बार जे स्वीट्स के जरिए और दूसरी बार लोकतंत्र यानी डेमोक्रेसी और आजादी के नाम पर। जर्मन लोगों ने बारूद बनाया। बहुत बढ़िया। लेकिन फिर उन्होंने हिस्सा बराबर करने के लिए
प्रिंटिंग मशीन भी बना दी। लेकिन हम लोग जो ना तो जे स्वीट्स हैं ना ही लोकतंत्र के पीछे पागल है। हम आजाद लोग हैं। फ्री स्पिरिट्स। हम अब भी उस तनाव को महसूस कर रहे हैं और शायद हमारे पास वह तीर भी है, वह जिम्मेदारी भी है और कौन जाने, वह लक्ष्य भी, वह गोल भी जिस पर निशाना लगाना है। विल टू ट्रुथ सच्चाई की चाह हमें कई खतरनाक कामों के लिए उकसाती है। पुराने सभी सोचने वालों ने पुराने सभी फिलॉसोफर्स ने इस सच्चाई की बड़ी इज्जत की है। पर इस चाहत ने हमारे सामने कैसे-कैसे सवाल खड़े कर दिए हैं। कितने अजीब और उलझे हुए सवाल।
यह कहानी बहुत पुरानी है। फिर भी लगता है जैसे अभी शुरू हुई हो। क्या ताज्जुब है कि हम अंत में थक जाए और अपना धैर्य खोकर, अपना पेशेंस खोकर इनसे मुंह मोड़ लें। अब हम खुद सवाल पूछना सीख रहे हैं। हमारे अंदर यह विल टू ट्रुथ, यह सच्चाई की चाह आखिर है क्या? हमने इस चाहत के जन्म के बारे में बहुत सोचा। फिर हम एक और भी गहरे सवाल पर रुक गए। वह सवाल था इस चाहत की कीमत का, इस चाहत की वैल्यू का। मान लो हमें सच चाहिए पर झूठ क्यों नहीं? अनसर्टेनिटी या इग्नोरेंस क्यों नहीं? अनिश्चितता या अज्ञानता क्यों नहीं? सच की कीमत का मामला हमारे सामने था या

शायद हम खुद इस मामले के सामने खड़े थे। यहां कौन पहेली सुलझाने वाला है और कौन खुद पहेली? लगता है यहां सवालों का मेला लगा है। क्या आप मानेंगे कि समस्या को पहले कभी किसी ने उठाया ही नहीं। जैसे हम पहले हैं जो इसे देख रहे हैं और इसे उठाने का खतरा ले रहे हैं। और इसे उठाने में बड़ा खतरा है। शायद इससे बड़ा कोई खतरा नहीं। कोई चीज अपनी उल्टी चीज से कैसे पैदा हो सकती है? जैसे सच गलती से कैसे निकल सकता है? या सच बोलने की चाह धोखे से कैसे बन सकती है? या भला काम स्वार्थ से कैसे निकल सकता है? ऐसा होना नामुमकिन है। जो ऐसा
सोचते हैं वे बेवकूफ हैं। जो चीजें कीमती हैं उनका जन्म अलग होना चाहिए। इस बदलती और धोखे वाली दुनिया से उनका कोई लेना देना नहीं हो सकता। वे तो किसी असली सच से ही आई होंगी। सोचने का यही तरीका पुराने मेटाफिजिशियंस की पहचान है। उनकी पूरी लॉजिक इसी पर टिकी है। उनका सबसे बड़ा भरोसा उल्टे मूल्यों एंटीथेसिस ऑफ वैल्यूस में है। किसी ने भी इस पर शक नहीं किया। जबकि शक करना सबसे जरूरी था। शक इस बात पर कि क्या सच में ऐसी उल्टी चीजें होती भी है या फिर यह सिर्फ ऊपर ऊपर का अंदाजा है। क्या यह सिर्फ एक घटिया नजरिया है?

हो सकता है कि सच और भलाई से ज्यादा कीमत झूठ, धोखे और स्वार्थ की हो। हो सकता है कि जिन अच्छी चीजों की हम इज्जत करते हैं, वे अंदर ही अंदर इन बुरी चीजों से जुड़ी हो। शायद पर इन खतरनाक शायद पर कौन बात करना चाहता है? इसके लिए हमें नए तरह के सोचने वाले नए तरह के फिलॉसफर्स का इंतजार करना होगा जिनका नजरिया बिल्कुल अलग हो और मुझे लगता है कि ऐसे लोग अब आने लगे हैं। मैंने सोचने वालों मैंने फिलॉसफर्स को बहुत ध्यान से देखा है। अब मैं कह सकता हूं कि ज्यादातर होश वाली सोच ज्यादातर कॉन्शियस थिंकिंग असल में कुदरती आदत ही है। इंस्टिंक्ट ही है। यहां तक कि फिलॉसफर्स की सोच भी जैसे बच्चा पैदा होने से खानदान नहीं बदलता। वैसे ही होश में होना आदतों के खिलाफ नहीं है। फिलॉसफर्स की ज्यादातर सोच उसकी कुदरती आदतों उसके इंस्टिंक्ट से दबी होती है। सरलॉजी के पीछे कुछ फिजियोलॉजिकल डिमांड्स होती हैं। कुछ शारीरिक जरूरतें जैसे सर्टेन चीज अनसर्टेन से बेहतर है। यह सच की कीमत धोखे से ज्यादा है। यह शायद हमारे जैसे जीवों के जिंदा रहने के लिए जरूरी छोटी बेवकूफियां हो। तो मान लो कि इंसान ही दुनिया का इकलौता पैमाना नहीं है। इकलौता मेजर ऑफ थिंग्स नहीं है। हमारे लिए किसी विचार का गलत होना कोई बड़ी दिक्कत नहीं है। हमारी यह बात सुनने में बहुत अजीब लग सकती है। सवाल यह है कि कोई विचार जीवन को बढ़ाने या बचाने में कितनी मदद करता है। हम तो मानते हैं कि सबसे गलत विचार ही हमारे लिए सबसे जरूरी है। बिना दिमागी कहानियों के इंसान जिंदा नहीं रह सकता। अगर हम गलत विचारों को छोड़ दें तो हम जीवन को ही नकार देंगे। हम नेगेशन ऑफ लाइफ कर देंगे। यह मानना कि झूठ जीवन की एक शर्त है। पुरानी सोच पर बड़ा हमला है। जो फिलॉसफी ऐसी हिम्मत करती है, वही अच्छाई और बुराई के पार |

i. The Philosopher's Perspective and the Will to Power.

लोग फिलॉसफर्स पर आधा भरोसा करते हैं और आधा मजाक उड़ाते हैं। इसका
कारण यह नहीं कि वे मासूम है। बल्कि इसलिए कि वे ईमानदार नहीं है। वे ऑनेस्ट नहीं है। वे शोर मचाते हैं जैसे वे सच्चाई के सबसे बड़े पहरेदार हो। वे नाटक करते हैं कि उनकी बातें ठंडी और साफ लॉजिक से निकली हैं। पर सच तो यह है कि उनके दिल की कोई पुरानी इच्छा या सुझाव या कोई सजेशन ही उनकी बातों का असली आधार होता है। वे सब बस वकील हैं, एडवोकेट्स हैं जो अपनी जिद्दी सोच को सच्चाई का नाम देकर बचा रहे हैं। उनमें इतनी हिम्मत नहीं कि वे इस बात को खुशीखुशी मान सके। उस बूढ़े मैनुअल कांड का नाटक देखिए। वह हमें अपने लॉजिक के टेढ़े रास्तों में फंसाते हैं ताकि हम उनके नियम को मान लें। हमें इसे देखकर हंसी आती है। यह स्पिनोजा का मैथमेटिकल फॉर्म देखो। उसने अपनी सोच को एक मास्क पहना दिया है। यह सब एक डरे हुए और बीमार अकेले आदमी की चालबाजी है। अब मुझे समझ आया है कि हर बड़ी फिलॉसफी असल में क्या है। यह उसे लिखने वाले की खुद की अनचाही कहानी ऑटोबायोग्राफी ही है। हर फिलॉसफी के पीछे कोई खास मकसद होता है। वही असली बीज है। वही असली वाइटल जर्म है जिससे पूरी सोच का पौधा उगता है।
किसी फिलॉसफर की मुश्किल बातों को समझने के लिए पहले पूछिए कि वह किस तरह की नैतिकता वह किस तरह की मोरालिटी चाहता है? मुझे नहीं लगता कि इंपल्स टू नॉलेज ज्ञान की [संगीत] चाह फिलॉसफी का पिता है। बल्कि किसी और चाहत किसी और इंपल्स ने ज्ञान को सिर्फ एक औजार सिर्फ एक इंस्ट्रूमेंट की तरह इस्तेमाल [संगीत] किया है। इंसान की हर कुदरती आदत हर नेचुरल इंपल्स ने कभी ना कभी फिलॉसफी झाड़ी है। हर आदत खुद को मालिक बनाना चाहती है। वैज्ञानिकों के मामले में बात अलग हो सकती है। वे शायद एक स्वतंत्र छोटी मशीन की तरह काम करते हो। उनका असली मतलब शायद परिवार, पैसा या राजनीति में हो। उनके लिए यह मायने नहीं रखता कि वे किस चीज पर रिसर्च कर रहे हैं। [संगीत] पर एक फिलॉसफर में कुछ भी बेजान या बाहरी नहीं होता। उसकी मोरलिटी, उसकी नैतिकता ही साफ बताती है कि वह असल में कौन है। फिलॉसोफर्स कितने नीच हो सकते हैं। कितने मेशियस हो सकते हैं। एपीक्यूरस ने प्लेटो और उनके चेलों का जो मजाक उड़ाया उसे चुभने वाली बात मैंने आज तक नहीं सुनी। उन्होंने उन्हें चमचा कहा। फ्लेटरर्स। उसका मतलब था कि यह सब बस एक्टर्स हैं। इनमें कुछ भी असली नहीं है। कुछ भी जेनुइन नहीं है। एपिकरस को प्लेटो के दिखावे और तड़क भड़क वाले स्टाइल से चिढ़ थी। एपीक्यूरस खुद सामोस का एक मामूली स्कूल टीचर था। वह एथेंस के एक छोटे से बगीचे में छुप कर रहता था। शायद उसने प्लेटो की कामयाबी से जलकर ही अपनी 300 किताबें लिखी थी। कौन जाने हर फिलॉसफी में एक ऐसा मोड़ आता है जहां दार्शनिक की अपनी जििद उसकी अपनी कन्विक्शन सामने [संगीत] आ जाती है। पुराने जमाने की एक बात है। एक गधा आया जो खूबसूरत भी था और ताकतवर भी। मतलब फिलॉसफर की अक्ल के बीच में उसकी बेवकूफी आ ही जाती है। तुम कुदरत के हिसाब से जीना चाहते हो नेचर के हिसाब से। ओ नेक स्टइक्स तुम शब्दों का कैसा धोखा दे रहे हो। जरा कुदरत को देखो। वह कितनी बेपरवाह है। उसका कोई मकसद नहीं है। कोई पपस नहीं है। उसमें

ना दया है ना इंसाफ। वह जितनी उपजाऊ है, उतनी ही बंजर भी। ऐसी बेपरवाह कुदरत के हिसाब से तुम कैसे जी सकते हो? जीना तो कुदरत से अलग होना है। जीने का मतलब है चीजों को चुनना, पक्षपात करना और अलग होने की कोशिश करना। तुम्हारा यह नियम कि कुदरत के हिसाब से जियो, नेचर के हिसाब से जियो। असल में जिंदगी के हिसाब से जीने जैसा ही है। तो इसमें नया क्या है? जो तुम पहले से हो उसे नियम क्यों बना रहे हो? असल बात तो यह है कि तुम अपनी सोच और अपने आदर्श, अपने आइडियल्स नेचर पर थोपना चाहते हो, डिक्टेट करना चाहते हो।
तुम चाहते हो कि नेचर तुम्हारे जैसी बन जाए। यह तुम्हारा घमंड है। तुम्हारा प्राइड है। यह तुम्हारी ताकत की चाहत, तुम्हारी विल टू पावर है। तुम्हारी फिलॉसफी असल में दुनिया पर कब्जा करने की एक दिमागी कोशिश है। आजकल पूरे यूरोप में असली दुनिया और दिखावे की दुनिया पर बड़ी चालाकी से बहस हो रही है। जो लोग इसके पीछे सिर्फ सच्चाई की चाह विल टू ट्रुथ देखते हैं। वे कच्चे खिलाड़ी हैं। कुछ लोग ऐसे हैं जो किसी भी पक्की चीज किसी भी सर्टेनिटी के लिए अपनी जान देने को तैयार हैं। वे किसी अनिश्चित चीज से बेहतर निश्चित शून्य को मानते हैं। किसी अनसर्टेन चीज से बेहतर शोर नथिंग को मानते हैं। यह सिर्फ निराशा है। यह सिर्फ नीलिज्म है। यह थकी हुई आत्माओं की निशानी है। लेकिन कुछ मजबूत सोचने वाले भी हैं। वे आज के विचारों से ऊब चुके हैं। वे पुराने भगवान या अमर आत्मा इमोर्टल सोल जैसे विचारों की तरफ वापस भाग रहे हैं। उन्हें आज की दिखावटी बातों, आज की पॉजिटिविज्म से नफरत है। वे बस आज की असलियत से दूर भागना चाहते हैं। अगर उनमें थोड़ी और हिम्मत और ताकत होती [संगीत] तो वे पीछे जाने के बजाय कहीं और निकल जाते। आजकल लोग इमैनुअल कांड के असर को छुपाने की कोशिश कर रहे हैं। कांड को अपनी दिमागी लिस्ट, अपनी कैटेगरीज पर बहुत नाज था। उसने दावा किया कि उसने इंसान के अंदर एक नई दिमागी ताकत, एक सिंथेटिक जजमेंट और प्रायरी ढूंढ ली है। भले ही उसने खुद को धोखा दिया हो पर उसकी इसी बात ने जर्मन फिलॉसफी को चमका दिया। कांट ने खुद से पूछा, यह दिमागी रास्ते, यह सिंथेटिक जजमेंट्स और प्रायोरिटी कैसे मुमकिन है? उसका जवाब क्या था? उसने कहा, एक अंदरूनी ताकत की वजह से। पर उसने यह बात इतने घुमा फिराकर और भारी शब्दों में कही कि लोगों को उसकी यह बेवकूफी नजर ही नहीं आई। लोग इस नई ताकत को सुनकर पागल हो गए। यह तो वैसा ही मजाक है जैसे मुलियर के नाटक में एक डॉक्टर कहता है। अफीम से नींद इसलिए आती है क्योंकि उसमें सुलाने वाली ताकत है। उसमें स्लीपिंग पावर है। यह समय ऐसी बातों पर हंसने का है। हमें यह पूछना चाहिए। हमें ऐसे विचारों पर यकीन करने की जरूरत क्यों है? सच तो यह है कि यह विचार गलत हो सकते हैं। पर हमारे जैसे जीवों को बचाए रखने के लिए इनका भरोसा करना जरूरी है। जर्मन फिलॉसफी ने पूरे यूरोप के लिए एक नींद की गोली का काम किया। इसने पादियों, [संगीत] कलाकारों और पुराने ख्यालात के लोगों को एक सहारा दे दिया। ताकि वे दुनिया की कड़वी हकीकत से आंखें मूंद सके। मटेरियलिस्टिक एटॉमिज्म पदार्थ वाली परमाणु सोच अब हार चुकी है। यूरोप में अब कोई भी अकलमंद इस पर यकीन नहीं करता। इसका क्रेडिट पोलैंड के बोसोविच को जाता है। जैसे कॉपरनिकस ने हमें सिखाया कि धरती रुकी हुई नहीं है। वैसे ही बोस्कोविच ने सिखाया कि मैटर या एटम पदार्थ या परमाणु जैसा कुछ भी पक्का नहीं है। यह हमारी इंद्रियों [संगीत] यह हमारी सेंसेस पर बहुत बड़ी जीत है। लेकिन हमें यही नहीं रुकना। हमें उस सोल एटॉमिज्म उस आत्मा वाली परमाणु सोच को भी खत्म करना होगा जिसे ईसाई धर्म ने इतने सालों से

सिखाया है। वे कहते हैं कि आत्मा कभी ना खत्म होने वाली और अटूट चीज है। इसे विज्ञान से बाहर फेंक देना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं कि हम आत्मा शब्द ही छोड़ दें। पर अब हमें नई तरह की आत्मा की बात करनी होगी। ऐसी आत्मा जो मर सकती है या जो हमारी आदतों और भावनाओं का एक मिलाजुला ढांचा है। सोशल स्ट्रक्चर है इंस्टिट्स और पैशंस का नया साइकोलॉजिस्ट नया मनोवैज्ञानिक अब पुराने अंधविश्वासों को खत्म कर रहा है। उसे अकेलापन महसूस हो सकता है। पर उसे नई चीजें ढूंढनी ही होंगी। मनोवैज्ञानिकों को अब सुधर जाना चाहिए। वह कहते हैं कि खुद को बचाए रखना सेल्फ प्रिजर्वेशन इंसान की सबसे बड़ी आदत है। यह गलत है। कोई भी जिंदा चीज सबसे पहले अपनी ताकत को बाहर निकालना चाहती है। डिस्चार्ज करना चाहती है। जीवन असल में विल टू पावर [संगीत] है। ताकत की चाहत है। खुद को बचाना तो बस इसका एक इनडायरेक्ट नतीजा है। फालतू के बड़े- बड़े नियमों से बचिए। यह सब पुराने फिलॉसोफर्स की उलझी हुई बातें हैं। आजकल कुछ ही लोगों को समझ आ रहा है कि नेचुरल फिलॉसफी दुनिया का कोई एक्सप्लेनेशन नहीं है।

ii. Beyond Traditional Psychology and Morality

यह तो बस दुनिया को देखने और सजाने का हमारा अपना एक तरीका है। क्योंकि यह हमारी आंखों और हाथों के भरोसे चलता है। इसलिए आम लोगों को यह बहुत सच्चा लगता है। उन्हें लगता है कि जो दिख रहा है वही सच है। पर प्लेटो का नजरिया अलग था। वह ऊंचे दर्जे के थे। एरिस्टोक्रेटिक थे। उसने अपनी इंद्रियों को अपने सेंसेस के शोर को शांत रखा और अकल के जाल से दुनिया को समझा। आज के वैज्ञानिक बस उतना ही मानते हैं जो हाथ से छुआ जा सके। यह तो बस मजदूरों और मिस्त्रियों के लिए ठीक है पर महान विचारों के लिए नहीं। अगर शरीर के विज्ञान को समझना है, अगर फिजियोलॉजी को समझना है तो एक बात गांठ बांध लीजिए। हमारी इंद्रियां कोई जादू नहीं है। कुछ लोग कहते हैं कि बाहर की दुनिया हमारे शरीर के अंगों ने बनाई है। यह तो बहुत बड़ी बेवकूफी है। जरा सोचिए। अगर बाहर की दुनिया हमारे अंगों ने बनाई और हमारा शरीर भी उसी दुनिया का हिस्सा है तो क्या हमारे अंगों ने ही हमारे अंगों को बनाया? यह तो बिल्कुल बकवास और सिर पैर की बात है। आज भी कुछ भोले लोग मानते हैं कि मैं [संगीत] सोचता हूं जैसी बातें बिल्कुल पक्की हैं। शोपिन हाव जैसे लोग भी इसी अंधविश्वास में थे। उन्हें लगता था कि वे सच को सीधे पकड़ रहे हैं। पर जब मैं सोचता हूं को गहराई से देखता हूं तो इसमें बहुत से छिपे हुए दावे मिलते हैं। जैसे मैं कौन हूं? क्या सच में कोई मैं है जो सोच रहा है? क्या सोचना कोई काम है? कोई एक्टिविटी है? क्या मुझे सच में पता है कि सोचना क्या होता है? अगर मुझे पहले से पता ना हो तो मैं कैसे जानूंगा कि मैं सोच रहा हूं या बस महसूस कर रहा हूं। सच तो यह है कि मैं सोचता हूं कोई पक्का सच नहीं बल्कि सवालों का एक ढेर है। लॉजिक की बातें करने वाले भी बड़े

अंधविश्वासी होते हैं। वे यह नहीं मानते कि विचार अपनी मर्जी से आता है। मेरी मर्जी से नहीं। यह कहना गलत है कि [संगीत] मैं यानी सब्जेक्ट सोचता हूं। सच तो यह है कि सोच आती है वन थिंग्स या मैं तो बस व्याकरण बस ग्रामर का एक पुराना धोखा है। हम मान लेते हैं कि हर काम के पीछे कोई करने वाला होना चाहिए। जैसे पुराने लोग एटम को ढूंढते थे, वैसे ही यह लोग मैं को ढूंढ रहे हैं। पर शायद एक दिन हम इस मैं के बिना भी सोचना सीख लेंगे। किसी भी थ्योरी में सबसे मजेदार बात यह होती है कि उसे गलत साबित किया जा सके। इसी वजह से अकलमंद लोग उसकी तरफ खींचे चले आते हैं। फ्री विल आजाद मर्जी की कहानी सैकड़ों बार गलत साबित हो चुकी है। फिर भी यह आज तक जिंदा है। क्यों? क्योंकि हर बार कोई ना कोई नया सुरमा आता है जिसे लगता है कि वह इसे और बेहतर तरीके से गलत साबित कर सकता है। फिलॉसफर्स विल यानी इच्छा के बारे में ऐसे बात करते हैं जैसे वे इसे सबसे अच्छी तरह जानते हो। शोपेनवर ने तो यहां तक कह दिया कि बस यही एक चीज है जिसे हम पूरी तरह जानते हैं। पर मुझे लगता है कि उन्होंने भी बस एक आम गलतफहमी एक पॉपुलर प्रजुडिस्ट को बढ़ा चढ़ाकर बता दिया। विलिंग करना कोई एक आसान चीज नहीं है। इच्छा करना कोई एक आसान चीज नहीं है। यह बहुत कॉम्प्लिकेटेड मामला है। बहुत उलझा हुआ। बस नाम एक है इसलिए लोग इसे एक ही समझ लेते हैं। पर हम थोड़े सावधान बनेंगे। थोड़े कॉशियस। इच्छा करने के अंदर कई चीजें होती हैं। पहला सेंसेशंस, एहसास। जब हम किसी चीज से दूर जाते हैं या उसकी तरफ बढ़ते हैं तो शरीर में कई तरह के खिंचाव महसूस होते हैं। दूसरा सोच यानी थिंकिंग। हर इच्छा के पीछे एक रूलिंग थॉट होता है। एक मुख्य ख्याल। इस ख्याल को इच्छा से अलग नहीं किया जा सकता। तीसरा हुकुम देने वाली भावना इमोशन ऑफ कमांड जिसे लोग आजाद मर्जी या फ्रीडम ऑफ द विल कहते हैं। वह असल में हुकुम देने वाले का घमंड [संगीत] है। मैं आजाद हूं उसे यानी शरीर या अंग को मेरी बात माननी होगी। यही एहसास हर इच्छा में होता है। इंसान के अंदर हुकुम देने वाला और हुकुम मानने वाला दोनों एक ही है। पर हम इस बात को भूल जाते हैं और मैं शब्द का आई वर्ड का इस्तेमाल करके खुद को धोखा देते हैं। जब कोई काम पूरा होता है तो हमें लगता है कि हमारी इच्छा ने ही यह कर दिखाया। हम अपनी सफलता का क्रेडिट अपनी इच्छा को देते हैं और खुद को पावर महसूस करते हैं। खुद को ताकतवर। सच तो यह है कि हमारा शरीर बहुत सारी आत्माओं का एक मेल है। एक सोशल स्ट्रक्चर है। इच्छा करना मतलब हुकुम देना और हुकुम मानना ही है। फिलोसोफिकल आइडियाज अपनी मर्जी से कहीं से भी नहीं आ जाते। वे एक दूसरे से गहरे जुड़े होते हैं। जैसे किसी महाद्वीप के जानवर एक दूसरे से जुड़े होते हैं। वैसे ही विचार भी एक सिस्टम का हिस्सा होते हैं। फिलॉसफर भले ही खुद को आजाद समझे पर वे एक ही दायरे में बार-बार घूमते रहते हैं। उनका सोचना कोई नई खोज नहीं है। कोई नई डिस्कवरी नहीं है। यह तो पुरानी यादों को ताजा करने जैसा है। रिमेंबरिंग जैसा है। यह एक पुरानी जड़ की तरफ वापस लौटना है। यही वजह है कि भारत यूनान और जर्मन की फिलॉसफी एक जैसी दिखती है। जहां [संगीत] भाषा का व्याकरण एक जैसा होता है। वहां सोच भी एक ही रास्ते पर चलती है। जिन लोगों की भाषा का ढांचा अलग है वे दुनिया को अलग नजरिए से देखते होंगे। खुद का कारण खुद बनना अब तक की सबसे बड़ी बेवकूफी है। यह लॉजिक का मर्डर है। पर इंसान का घमंड इतना बढ़ा हुआ है कि वह इस बकवास में फंस जाता है। लोग फ्री विल इसलिए चाहते हैं। आजाद मर्जी इसलिए चाहते हैं। ताकि वे अपने हर काम की पूरी जिम्मेदारी खुद ले सके। वे भगवान, दुनिया, पूर्वजों या समाज को छोड़ना

चाहते हैं। यह वैसा ही है जैसे कोई अपने ही बाल पकड़ कर खुद को दलदल से बाहर खींचने की कोशिश करें। अगर आप इस फ्री विल इस आजाद मर्जी की बेवकूफी को समझ गए हैं तो एक कदम और आगे बढ़िए। नॉन फ्री विल मजबूर मर्जी कहना भी उतना ही गलत है। लोग कारण और असर को कॉज और इफेक्ट को अलग तरीके से देखते हैं। यह कोई असली चीजें नहीं है बल्कि हमारे दिमाग की बनाई कहानियां हैं ताकि हम एक दूसरे को अपनी बात समझा सके। असली जिंदगी में आजाद या मजबूर मर्जी जैसा कुछ नहीं होता। वहां सिर्फ मजबूत इच्छा, स्ट्रांग विल और कमजोर इच्छा यानी वीक विल होती है। जो लोग कहते हैं कि उनकी मर्जी आजाद नहीं है। वे अक्सर अपनी कमजोरी छुपा रहे होते हैं। कुछ लोग अपनी जिम्मेदारी से भागना चाहते हैं और कुछ लोग अपनी गलतियों का इल्जाम दूसरों पर डालना चाहते हैं। वे खुद को बेचारा खुद को सफरर दिखाकर सिंपैथी सहानुभूति पाना चाहते हैं या बस उनकी कमजोरी का एक चोला है। एक मास्क है। मुझे माफ करना। मैं एक पुराना भाषा एक्सपर्ट हूं। और अपनी आदत से मजबूर हूं। तुम वैज्ञानिक बड़े गर्व से नेचर्स लॉ की बातें करते हो। पर सच तो यह है कि यह कोई सच नहीं है। यह बस तुम्हारी अपनी इंटरप्रिटेशन है। तुम अपनी डेमोक्रेटिक इंस्टिंक्ट्स नेचर पर थोप रहे हो। तुम चाहते हो कि नेचर में सब बराबर हो। ना कोई भगवान, ना कोई मालिक। यही तुम्हारा असली मकसद है। इसलिए तुम नेचर लॉ का नारा लगाते हो। पर यह सिर्फ तुम्हारा नजरिया है। तुम्हारा पर्सपेक्टिव है। नेचर का सच नहीं। कल कोई और भी आ सकता है। वह उसी नेचर को बिल्कुल अलग तरीके से देख सकता है। वह देख सकता है कि नेचर में कोई कानून नहीं है। वहां तो सिर्फ ताकत का बेखौफ इस्तेमाल है। विल टू पावर है। वहां कानून की कमी है। इसलिए हर ताकत हर पावर [संगीत] हर पल अपना पूरा असर दिखाती है। तुम कहोगे कि यह भी तो सिर्फ एक नजरिया है, इंटरप्रिटेशन है। तो भाई और भी अच्छी बात है यह तो आज तक की सारी साइकोलॉजी नैतिकता के डर की वजह से डूब गई है। किसी ने गहराई में जाने की हिम्मत ही नहीं की। किसी ने भी साइकोलॉजी को ताकत की चाहत, विल टू पावर की बनावट और उसके विकास की तरह नहीं देखा। नैतिकता यानी मोरालिटी के डर ने अकलमंद लोगों को भी अंधा और कमजोर बना दिया है। एक असली रिस्चर को अपने ही दिल के विरोध से लड़ना पड़ता है। यह मानना कि अच्छी भावनाएं असल में बुरी भावनाओं से निकली हैं। एक मजबूत इंसान को भी बेचैन कर देता है। अगर कोई कहे कि नफरत जलन और लालच जीवन के लिए जरूरी है। तो लोगों को समुद्र वाली बीमारी सीस सिकनेस होने लगती है। यानी उनका जी घबराने लगता है। पर अगर हम इस नाव में बैठ ही गए हैं तो अब अपने दांत भी लीजिए। अपनी आंखें खुली रखिए और पतवार मजबूती से पकड़िए। हमें अपनी नैतिकता हमें अपनी मोरालिटी को कुशल कर उसके ऊपर से निकलना होगा। हमें खुद की नैतिकता को भी शायद खत्म करना पड़े। पर उससे क्या फर्क पड़ता है? जो रिस्चर इतना बड़ा बलिदान देगा, इतना बड़ा सैक्रिफाइस देगा, उसे एक इनाम मिलेगा। उसे हक होगा कि वह साइकोलॉजी को फिर से क्वीन ऑफ द साइंसेस विज्ञानों की रानी घोषित करें। बाकी सब विज्ञान इसकी सेवा के लिए ही बने हैं। साइकोलॉजी ही बुनियादी समस्याओं फंडामेंटल प्रॉब्लम्स तक पहुंचने का इकलौता रास्ता है। ओ यह होली सिंपलीसिटी यह भोली सादगी। इंसान कितनी अजीब और झूठी सादगी में जीता है। जब कोई इस तमाशे को अपनी आंखों से देख ले तो हैरान हुए बिना नहीं रह सकता। हमने अपने आसपास सब कुछ कितना साफ, आजाद और आसान बना लिया है। हमारी इंद्रियों को सिर्फ ऊपर ऊपर की चीजें ही पसंद आती हैं। हमारे विचार बस खेल तमाशा करना और गलत अंदाजे लगाना चाहते हैं। शुरू से ही हमने इग्नोरेंट

अज्ञानी बने रहने की पूरी कोशिश की है। क्यों? ताकि हम आजाद, लापरवाह और खुश रह सकें।
ताकि हम जीवन का मजा ले सकें। हमारा सारा ज्ञान, हमारा सारा नॉलेज असल में इसी अज्ञानता की पत्थर जैसी मजबूत नींव पर खड़ा है। विल टू नॉलेज सच्चाई की चाह असल में विल टू इग्नोरेंस ना जानने की चाहत के ऊपर खड़ी है। यह दोनों एक दूसरे के दुश्मन नहीं है। बल्कि ज्ञान तो अज्ञानता का ही एक सुधरा हुआ रूप है। एक रिफाइनमेंट है। भाषा हमेशा हमें धोखा देती है। वह उल्टी चीजों की बात करती है। ऑोजिट की जबकि असल में सब कुछ बस कम या ज्यादा का खेल है। हम अपनी बनाई हुई इस झूठी और आसान दुनिया को ही प्यार करते हैं। क्यों? क्योंकि हम जिंदा है और जीवन की गलतियों से प्यार है। फिलॉसफर्स दार्शनिकों मेरी बात ध्यान से सुनो। सच्चाई के लिए शहीद होने से बचो। सच्चाई के लिए दुख सहने का नाटक मत करो। यह तुम्हारी ईमानदारी को बर्बाद कर देता है। जब तुम बदनामी, शक और दुश्मनी से लड़ते हुए खुद को सच्चाई का पहरेदार बताने लगते हो तो तुम जिद्दी और हिंसक बन जाते हो। मेरे दार्शनिकों क्या सच्चाई क्या ट्रुथ इतनी बेचारी और कमजोर है कि उसे तुम्हारे जैसे पहरेदारों की जरूरत है। तुम जैसे लोग जो बस ख्यालों के जाले बुनते रहते हो। सच्चाई इस बात में नहीं है कि तुम बहस जीत लो।
सच्चाई तो उन छोटे-छोटे सवालिया निशानों में है। उन इंटेरोगेटिव मार्क्स में है जो तुम अपनी ही प्यारी बातों के पीछे लगाते हो। इससे अच्छा है कि तुम कहीं छुप जाओ। नकाब पहनो और चाले चलो ताकि लोग तुम्हें गलत समझे या तुमसे डरे। एक अच्छा एकांत, एक अच्छा सॉलिट्यूड चुनो। वह आजाद और हल्का एकांत जो तुम्हें अच्छा बनाए रखे। लंबी लड़ाई इंसान को जहरीला बना देती है। स्पिनोजा जैसे लोग जो समाज से कटे हुए थे अंत में बस बदला लेने वाले बन जाते हैं। दार्शनिक का शहीद होना एक घटिया नाटक जैसा है। यह बस इस बात का सबूत है कि असली कहानी अब खत्म हो चुकी है। हर खास आदमी हर सेलेक्ट मैन भीड़ से दूर अपनी एक सुरक्षित जगह चाहता है। वह वहां भीड़ और मेजॉरिटी से आजाद होना चाहता है। अगर किसी को आम लोगों की भीड़ देखकर घिन या बेचैनी नहीं होती तो वह ऊंचे दर्जे का इंसान नहीं है। लेकिन अगर कोई दार्शनिक सिर्फ कोई फिलॉसोफर सिर्फ अपने महल में ही छुपा रहता है, तो वह कभी सच्चा ज्ञान नहीं पा सकता। उसे एक दिन खुद से कहना होगा भाड़ में जाए मेरा अच्छा टेस्ट। मेरे लिए खुद से ज्यादा जरूरी वह आम आदमी है। उसे नीचे जाना होगा और आम लोगों को गहराई से समझना होगा।

iii. Philosophical Reflections on Truth, Language and Freedom

यह फिलॉसफर के जीवन का सबसे गंदा और थकाने वाला हिस्सा है। यहां उसे
सनिक्स काम आएंगे। यह वे लोग हैं जो अपनी जानवर जैसी आदतों को सबके सामने मानते हैं। एक ऊंचे इंसान को इनकी बातें ध्यान से सुननी चाहिए। कभी-कभी घिन
के साथसाथ मजा भी आता है। जैसे अबे गालियानी के मामले में वह बहुत गंदा लेकिन बहुत गहरा आदमी था। जब कोई इंसान को सिर्फ एक पेट और वासना की मशीन की तरह देखता है तो उसे गौर से सुनो। गुस्सा करने वाला आदमी हमेशा सबसे बड़ा झूठा होता है। अपनी बात समझाना बहुत मुश्किल है। खासकर तब जब आप गंगा की तरह तेज सोचते और जीते हो और आपके आसपास के लोग कछुए या मेंढक की तरह धीमे हो। मैं तो खुद अपनी बातों को मुश्किल बनाने की पूरी कोशिश करता हूं। अपने उन अच्छे दोस्तों से बचो जो सोचते हैं कि दोस्ती के नाते उन्हें सब कुछ आसानी से समझ आ जाना चाहिए। उन्हें गलतफहमी के मैदान में खेलने दो ताकि तुम उन पर हंस सको या फिर उन्हें अपनी जिंदगी से निकाल दो और तब भी हंसो। एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना बहुत मुश्किल है। सबसे बड़ी दिक्कत है लिखने की रफ्तार। यह रफ्तार लोगों के खून और उनके खानपान के तरीके से आती है। कई अनुवाद बहुत ईमानदारी से किए जाते हैं। पर वे मजा खराब कर देते [संगीत] हैं। वे असली किताब की पूर्ति और मजे को पकड़ नहीं पाते। जर्मन लोग अपनी भाषा में तेज रफ्तार से बात नहीं कर सकते। [संगीत] इसलिए वे आजाद सोच के बारीक नखरों को भी नहीं समझ पाते। उन्हें मजाक और तीखा अंदाज समझ नहीं आता। जर्मन स्टाइल बहुत भारी, थकाऊ और बोझिल होता है। यहां तक कि गोइथ भी बहुत अकड़ कर लिखता था। लिसिंग थोड़ा अलग था क्योंकि उसे जर्मनी से बाहर की

हवा पसंद थी। मैकी आवेली को देखो। वह गंभीर बातों को भी सरपट दौड़ते हुए मजाक के साथ लिखता है और पेट्रोनियस वह तो रफ्तार का उस्ताद है।

उसके शब्दों में हवा जैसी तेजी है जो सब कुछ साफ कर देती है। बिना अरिस्टोफेंस के प्लेटो भी अपनी जिंदगी नहीं काट पाता। प्लेटो के सिरहाने के नीचे बाइबल नहीं बल्कि अरिस्टोफेंस की किताब मिली थी। आजाद रहना हर किसी [हंसी] के बस की बात नहीं है। यह सिर्फ ताकतवर लोगों का हक है। जो बिना जरूरत के आजाद होने की कोशिश करता है, वह बहुत बड़ा खतरा मोल लेता है। वह एक ऐसी भूल भुलैया में घुस जाता [संगीत] है जहां कदम कदम पर मौत है। अगर वह वहां रास्ता भटक जाए तो कोई उसकी मदद नहीं कर सकता। कोई उसकी तकलीफ को भी समझ नहीं पाएगा। [संगीत] वह इतना दूर निकल जाता है कि वापस इंसानों की सिंपथी, इंसानों की हमदर्दी तक नहीं लौट सकता। हमारी गहरी बातें आम लोगों को बेवकूफी या जुर्म यानी क्राइम लग सकती हैं। पुराने सोचने वालों ने बाहरी और अंदरूनी एग्जोटेरिक और एसोटेरिक दुनिया में फर्क किया था। आम लोग चीजों को नीचे से ऊपर की तरफ देखते हैं। पर ऊंचे लोग चीजों को ऊपर से नीचे देखते हैं। ऊंची आत्माओं के लिए जो खाना या टॉनिक है वह आम लोगों के लिए जहर हो सकता है। एक मामूली आदमी की अच्छाई उसकी वर्चू एक फिलॉसफर के लिए कमजोरी हो सकती है।

आम लोगों के लिए बनी किताबें हमेशा बदबूदार होती हैं। जहां भीड़ जमा होती है वहां हवा हमेशा गंदी होती है। अगर साफ हवा में सांस लेनी है तो चर्च जाना छोड़ दो। जवानी में हम या तो किसी की बहुत इज्जत करते हैं या नफरत। हमें बीच का रास्ता समझ नहीं आता। हमारा टेस्ट बहुत घटिया होता है। हमें सब कुछ पक्का चाहिए। जवानी चीजों को तोड़ मरोड़ कर देखती है ताकि वह अपना गुस्सा या प्यार निकाल सके। बाद में जब हमें धोखे मिलते हैं तो हम खुद पर ही शक करने लगते हैं। हम अपनी ही भावनाओं को सजा देते हैं। फिर हम जवानी के ही दुश्मन बन जाते हैं। और 10 साल बाद समझ आता है कि यह गुस्सा भी सिर्फ जवानी की ही एक हरकत थी। इतिहास के सबसे लंबे समय में किसी काम की कीमत उसके नतीजे से उसके कॉन्सिक्वेंसेस से तय होती थी। काम के पीछे की वजह या नियत यानी इंटेंशन पर कोई ध्यान नहीं देता था। इसे हम नैतिकता से पहले का समय प्री मोरल पीरियड कह सकते हैं। पिछले 10,000 सालों से दुनिया बदल गई। अब लोग नतीजे के बजाय काम की नियत को देखते हैं। यह पुरानी सोच से बेहतर था। पर अब यह भी एक अंधविश्वास बन गया है। आज के हम जैसे लोग मानते हैं कि काम की असली कीमत उस चीज में है जो अनजानी है। नियत तो बस एक ऊपरी चमड़ी जैसी है। चमड़ी कुछ दिखाती तो है पर बहुत कुछ छुपा भी लेती है। नियत सिर्फ [हंसी] एक इशारा है जिसे समझना जरूरी है। नियत वाली नैतिकता अब पुरानी पड़ गई है। जैसे ज्योतिष खत्म हुआ वैसे ही इसे भी खत्म होना होगा। अपनी नैतिकता को पार करना यही आज के सबसे साहसी और बुरे लोगों का काम है। अब और बर्दाश्त नहीं होगा। दूसरों के लिए खुद को मिटा देना, त्याग करना और अपनी इच्छाओं को मारना। इन सब बातों का अब हिसाब लेना होगा। इन्हें अदालत में लाना ही पड़ेगा। जैसे आजकल के कलाकार बिना किसी स्वार्थ के कला की आड़ में अपनी कमजोरी छुपाते हैं। वैसे ही यह नैतिकता भी है। दूसरों के लिए और मेरे लिए नहीं। इस बातों में बहुत ज्यादा मीठा जहर है। क्या यह सब बस धोखे नहीं है? हमें सावधान रहना होगा। अगर यह बातें किसी को खुशी देती हैं, तो इसका मतलब

यह नहीं कि यह सही है। सावधान रहिए। आज दुनिया में जो सबसे पक्की बात है [संगीत] वह यह है कि यह दुनिया वैसी नहीं है जैसे दिखती है। यह पूरी तरह गलत है। कुछ सोचने वाले कहते हैं कि हमारा दिमाग या आत्मा दुनिया को गलत तरीके से देखती है। पर क्या पता हमारी सोच ही हमें धोखा दे रही हो। पक्का सच जैसी बात सिर्फ एक भूली सोच है।
अब हमें नैतिक होने का नाटक छोड़ना होगा। हमें मोरल होने का नाटक छोड़ना होगा। फिलॉसफरों को अभिषक करने का और बुरा बनने का हक है। सच और झूठ एक दूसरे के दुश्मन नहीं है। यह बस एक ही चीज के हल्के और गहरे रंग है। जैसे पेंटिंग में अलग-अलग शेड्स होते हैं। क्या पता यह दुनिया यह पूरी दुनिया ही एक कहानी हो। और अगर कोई कहे कि कहानी है तो उसे लिखने वाला भी होगा। तो मैं कहूंगा क्यों? क्या पता यह लिखने वाला भी उसी कहानी का हिस्सा हो। अब समय आ गया है कि हम ग्रामर के पुराने नियमों पर यकीन करना छोड़ दें। ओ वोल्टेयर।

इंसान कितना बेवकूफ है। सच्चाई की तलाश में खतरा है। अगर कोई इंसान बहुत दयालु बनकर सच ढूंढने निकलेगा तो उसे कुछ नहीं मिलेगा। मान लो कि हमारी इच्छाएं और भावनाएं, हमारी पेशेंस ही इकलौता सच है। क्या हम पूरी दुनिया को इसी से नहीं समझ सकते? यह मैकेनिकल दुनिया यह मटेरियल वर्ल्ड असल में हमारी भावनाओं का ही एक पुराना और मजबूत रूप है। यह जीवन का सबसे शुरुआती रूप है। हमें कारण के हमें कॉजलिटी के कई नियम मानने की जरूरत नहीं है। अगर हम इच्छा की ताकत को मानते हैं तो हमें मानना होगा कि हर जगह इच्छा ही काम कर रही है।

सच तो यह है कि हमारी पूरी आदतों और शरीर के कामों को एक ही चीज से समझा जा सकता है। वह है विल टू पावर। ताकत की चाहत। अगर हम दुनिया को अंदर से देखें तो यह सिर्फ विल टू पावर है और कुछ भी नहीं। लोग कहेंगे इसका मतलब भगवान नहीं है पर शैतान है। मैं कहूंगा बिल्कुल नहीं। और तुम आम लोगों की भाषा में बात करना बंद क्यों नहीं करते? फ्रेंच रिवोल्यूशन एक घटिया नाटक था। पर दूर से देखने वालों ने उसमें अपना गुस्सा और जोश भर दिया। उन्होंने उस पर अपनी ऐसी इंटरप्रिटेशन थोप दी कि असली कहानी ही गायब हो गई। हम भी शायद अपनी पिछली यादों को गलत समझ रहे हैं ताकि हम उन्हें बर्दाश्त कर सकें। कोई बात इसलिए सच नहीं हो जाती क्योंकि वह आपको खुश करती है या नेक [संगीत] बनाती है। सुख और अच्छाई कोई सबूत नहीं है। कोई बात सच हो सकती है। भले ही वह बहुत खतरनाक और नुकसानदेह हो। किसी का दिमाग कितना मजबूत है। यह इस बात से पता चलता है कि वह बिना चीनी मिलाए कितना कड़वा सच झेल सकता है। जो लोग बुरे और दुखी हैं, वे शायद सच को बेहतर देख पाते हैं। स्टैंडल ने सही कहा था। एक अच्छा फिलॉसफर होने के लिए इंसान को सूखा, साफ और बिना किसी भ्रम के होना चाहिए। एक फिलॉसफर का दिमाग एक सफल बैंकर की तरह होना चाहिए जो चीजों को बिल्कुल वैसा देखे जैसी वे हैं। गहरी चीजों को नकाब से प्यार होता है। जो बहुत गहरा है उसे तो अपनी शक्ल और अपनी पहचान से भी नफरत होती है। क्या भगवान के लिए उल्टा दिखना ही उनका सबसे सही नकाब नहीं है। यह सवाल पूछने लायक है। कभी-कभी हम अच्छी बातों और दया को छुपाने के लिए भी बुरा व्यवहार करते हैं ताकि कोई हमें पहचान ना पाए। शर्म बहुत चालाक होती है। जिस चीज से हमें शर्म आती है, जरूरी नहीं कि वह बुरी हो। नकाब के पीछे सिर्फ धोखा नहीं होता। कभी-कभी बहुत भलाई भी होती है।

The Essence of the Free Spirit

हर गहरी आत्मा को एक नकाब की जरूरत होती है। असल में हर गहरी आत्मा के चारों तरफ अपने आप एक नकाब चढ़ जाता है। क्यों? क्योंकि लोग उसकी हर बात और हर कदम का गलत और ऊपर ऊपर का मतलब निकालते हैं। तुम्हें खुद का टेस्ट करना होगा। यह देखने के लिए कि क्या तुम आजादी और हुकुम देने के लायक हो। यह काम सही वक्त पर करना होगा। इस टेस्ट से भागो मत। यह सबसे खतरनाक खेल है। इसका जज कोई और नहीं तुम खुद हो। किसी भी इंसान से मत चिपको। चाहे वह कितना ही प्यारा क्यों ना हो। हर इंसान एक जेल की तरह [संगीत] है। अपने देश से मत चिपको।

चाहे वह कितना ही दुखी क्यों ना हो। दूसरों के लिए दया से मत चिपको। चाहे वे कितने ही बड़े लोग क्यों ना हो। विज्ञान से मत चिपको। चाहे वह कितनी भी कीमती खोज क्यों ना दे। अपनी खुद की आजादी से भी मत चिपको। उस पंछी की तरह मत बनो जो सिर्फ इसलिए ऊपर उड़ता है ताकि सब कुछ नीचे देख सके। अपनी अच्छाइयों से भी मत चिपको। खुद को बचाए रखना ही आजादी का सबसे बड़ा टेस्ट है। नए तरह के फिलॉसोफर्स आ रहे हैं। मैं उन्हें एक खतरनाक नाम देने की हिम्मत करूंगा। वे खुद को एक पहेली, एक पजल बनाकर रखना चाहते हैं। भविष्य के यह फिलॉसफर्स शायद आजमाने वाले कहलाएंगे। यह नाम भी बस एक अंदाजा है। क्या यह नए फिलॉसफर्स सच्चाई के दोस्त होंगे? हां, शायद पर वे जिद्दी नहीं होंगे। उनका घमंड और उनका टेस्ट उन्हें यह मानने नहीं देगा कि उनका सच सबका सच बन जाए। वे कहेंगे मेरा नजरिया सिर्फ मेरा है। किसी और का इस पर हक नहीं है। सबको खुश करने की और सबसे सहमत होने की चाहत एक घटिया आदत है। सबका भला जैसी कोई चीज नहीं होती। यह शब्द ही गलत है। जो सबके लिए है उसकी कोई कीमत नहीं होती। बड़ी चीजें सिर्फ बड़े लोगों के लिए होती हैं। गहराई सिर्फ गहरे लोगों के लिए और जो

अनोखा है जो रेयर है वह सिर्फ अनोखे लोगों के लिए। यह भविष्य के फिलॉसफर्स बहुत आजाद लोग होंगे। फ्री स्पिरिट्स होंगे। पर आज के तथाकथित आजाद ख्यालों वाले लोगों से बिल्कुल अलग होंगे। आज यूरोप और अमेरिका में कुछ लोग खुद को आजाद कहते हैं। पर वे सिर्फ सबको बराबर करने वाले हैं। वे लोकतंत्र के गुलाम हैं। उनके पास खुद का कोई अकेलापन नहीं है। कोई सॉलीट्यूड नहीं है। वे बस भेड़चाल वाली खुशी चाहते हैं। सुरक्षा, आराम और दुख का खात्मा। वे बराबरी और दया के गीत गाते हैं। वे चाहते हैं कि दुनिया से दुख यानी सफरिंग मिट जाए।
पर हम लोग उनसे उल्टा सोचते हैं। हम मानते हैं कि इंसान तभी मजबूत बनता है जब खतरा और दबाव बढ़ता है। दबाव से ही इंसान का दिमाग तेज और साहसी बनता है। इंसान की जीने की चाह को ताकत की चाहत में बदलना होगा। बुराई, जुल्म, खतरा और चालाकी। यह सब भी इंसान को ऊंचा उठाने के लिए उतने ही जरूरी है जितना कि अच्छाई। हम बिय्ड गुड एंड इविल। हम अच्छाई और बुराई के पार वाले लोग हैं। हम अकेलेपन के प्रेमी हैं। हम सॉलिट्यूड के प्रेमी हैं। हम आजाद आत्माएं हैं। हम फ्री स्पिरिट्स हैं। हम साहसी हैं। हम खोज करने वाले हैं। हम पुराने नियमों और आदतों से ऊपर उठ चुके हैं। शायद तुम भी ऐसे ही हो। हो आने वाले फिलॉसफर्स इंसान की आत्मा और उसकी सीमा यह सब एक मनोवैज्ञानिक के लिए शिकार का मैदान है। एक ऐसा मनोवैज्ञानिक जिसे बड़े शिकार का शौक है पर उसे अक्सर दुख होता है क्यों क्योंकि वह आत्मा का जंगल बहुत बड़ा है और वह अकेला है। उसे सैकड़ों मददगार और शिकारी कुत्ते चाहिए। पर उसे कोई नहीं मिलता। जो पढ़े लिखे लोग मदद के लिए आते हैं, वे खतरा देखते ही डर जाते हैं। जैसे ही असली शिकार शुरू होता है, उनकी हिम्मत जवाब दे जाती है। आत्मा के पुराने एक्सपीरियंसेस को समझने के लिए बहुत गहराई चाहिए।

किसी को कुछ जानने के लिए सब कुछ खुद ही करना पड़ता है। मेरी यह जिज्ञासा यह मेरी क्यूरियोसिटी एक प्यारा सा ऐब है। पर सच के प्रति इस प्यार का फल धरती पर ही मिल जाता है। क्रिश्चियनिटी की वह पुरानी फथ, वह पुरानी श्रद्धा कोई सीधी साधी बात नहीं थी। यह दिमाग की आत्महत्या जैसा है। [संगीत] सुसाइड ऑफ रीजन जैसा। क्रिश्चियनिटी का मतलब है अपनी सारी आजादी, घमंड और खुद पर भरोसे को कुर्बान कर देना। यह खुद को दिमागी तौर पर अपाहिज बनाने जैसा है। क्रॉस पर भगवान गॉड ऑन द क्रॉस। यह विचार ही कितना अजीब और डरावना था। यह रोम के ऊंचे और आजाद लोगों पर गुलामों का बदला था। गुलामों को बराबरी और दया के विचार पसंद आते हैं। वे अपनी छिपी हुई तकलीफों की वजह से विद्रोह करते हैं। उन्हें हर चीज पक्की चाहिए। वह बीच का रास्ता नहीं जानते। जब भी धर्म का पागलपन आता है, तीन चीजें जरूर दिखती हैं। अकेलापन यानी सॉलिट्यूड, उपवास यानी फास्टिंग और ब्रह्मचर्य यानी सेक्सुअल ऑबस्टिनेंस। पर कौन किसकी वजह से होता है यह कोई नहीं जानता। हो सकता है यह सिर्फ मिर्गी का ही एपिलेप्सी का ही एक रूप हो। लोग संत को देखकर हैरान होते हैं। उन्हें लगता है कि कोई चमत्कार हो गया है। कोई मिरेकल हो गया है। एक बुरा आदमी अचानक अच्छा आदमी बन गया। यह कोई चमत्कार नहीं है। बल्कि हमारी समझ की कमी है। हमने सच को गलत तरीके से पढ़ा है। हमने मान लिया कि अच्छाई और बुराई दो बिल्कुल अलग चीजें हैं। पर साइकोलॉजी यहां नैतिकता के नीचे दब गई है। यूरोप के दक्षिण के लोग अपने धर्म से बहुत गहराई से जुड़े हैं। पर हम उत्तर

वाले धर्म के मामले में थोड़े कच्चे हैं। हमारा खानदान ही ऐसा है। फ्रांस के लोगों में फिर भी थोड़ा धार्मिक जोश दिखता है। अर्निस्ट रेनन कहते हैं धर्म इंसान को सच दिखाता है। मुझे तो यह बात सुनकर बहुत गुस्सा आता है। यह सिर्फ धार्मिक बेवकूफी है। मेरे लिए सच्चाई इससे बिल्कुल उल्टी है। पर अपने से बिल्कुल अलग नजरिया रखना भी एक गर्व की बात है। पुराने यूनानियों पुराने ग्रीक के धर्म में एक कमाल की बात थी। वे नेचर और जीवन के प्रति बहुत शुक्रगुजार बहुत ग्रेटट्यूड रहते थे। ऐसा वही कर सकता है जो ऊंचे दर्जे का इंसान हो जो सुपीरियर हो। बाद में जब वहां आम भीड़ बढ़ गई तो धर्म में डर आ गया और यहीं से क्रिश्चियनिटी की नीव पड़ी। भगवान के लिए जुनून कई तरह का होता है। लूथर जैसा रूखा और जिद्दी इसमें कोई नजाकत नहीं है। कोई डेलीिकसी नहीं है। सेंट ऑगस्टीन जैसा गुलामों वाला जोश मैडम गुयन जैसा औरतों वाला नखरा वे बस भगवान के साथ जुड़ना चाहते हैं। कभी-कभी यह बस जवानी का जोश होता है या फिर किसी कुंवारी बुढ़िया का पागलपन या उसकी आखिरी उम्मीद। चर्च ने अक्सर ऐसी औरतों को संत बना दिया है। दुनिया के सबसे ताकतवर लोग हमेशा संत के आगे झुकते हैं। क्यों? क्योंकि संत एक पहेली जैसा है। उसने खुद पर कब्जा किया। उसने अपनी सारी सुख सुविधाओं को छोड़ दिया। ताकतवर लोगों ने संत की इस कमजोरी के पीछे एक बहुत बड़ी ताकत, एक विल टू पावर को देख लिया। वे उस मजबूत इच्छा शक्ति। वे उस मजबूत विल को इज्जत करते थे। संत का सम्मान करके वे असल में अपनी ही ताकत की इज्जत कर रहे थे। उन्हें लगा कि संत को शायद कोई बहुत बड़ा खतरा पता है। दुनिया के ताकतवर लोग संत से डरने लगे। उन्हें एक नया दुश्मन दिखा जिसे वे हरा नहीं सकते थे। वह थी विल टू पावर। ताकत की चाहत। यहूदियों का पुराना नियम ओल्ड टेस्टामेंट महान है। इसमें ऐसी बातें और लोग हैं जिनका यूनान या भारत के साहित्य से कोई मुकाबला नहीं है। इसे पढ़कर डर और इज्जत [संगीत] महसूस होती है। आज के पालतू इंसानों के लिए यह नहीं है। महान और मामूली की पहचान करने के लिए पुराना नियम एक कसौटी है। नया नियम न्यू टेस्टामेंट तो बस मामूली और दबे हुए लोगों के लिए है। इन दोनों को एक साथ जोड़कर बाइबल कहना यूरोप की सबसे बड़ी बेवकूफी है। यह आत्मा के खिलाफ एक जुर्म है। एक क्राइम है। आज नास्तिकता एथिज्म क्यों बढ़ रही है? क्योंकि भगवान का बाप वाला रूप अब खत्म हो गया है। जज और इनाम देने वाला भी खत्म। उसकी आजाद मर्जी उसकी फ्री विल भी झूठी ही निकली। वह हमारी सुनता नहीं है। अगर सुनता भी है तो उसे मदद करना नहीं आता। सबसे बुरी बात तो यह है कि वह साफ-साफ बात भी नहीं कर पाता। यूरोप के लोगों का भगवान पर से भरोसा उठ गया है। आज के सभी दार्शनिक आज के सभी फिलॉसोफर्स आत्मा यानी सोल की पुरानी सोच पर हमला कर रहे हैं। वे क्रिश्चियनिटी धर्म की जड़ों को काट रहे हैं। पहले लोग मानते थे कि मैं सब्जेक्ट हूं इसलिए सोच प्रेडिकेट आती है। यानी कोई करने वाला होना चाहिए पर अब भी इस जाल से बाहर निकलना चाहते हैं। इमैनुअल कांट ने भी यही दिखाया कि हम मैं को साबित नहीं कर सकते। यह विचार भारत की वेदांत फिलॉसफी जैसा ही है। रिलीजियस क्रुएलिटी धार्मिक क्रूरता की एक बड़ी सीढ़ी है। इसके तीन मेन पड़ाव है। पहले लोग अपने भगवान के लिए इंसानों की बलि देते थे। ह्यूमन सैक्रिफाइस। जिन्हें वे सबसे ज्यादा प्यार करते थे, उन्हें मार देते थे। फिर समय बदला। लोगों ने अपनी नेचुरल इंस्टिंक्ट्स और अपनी प्रकृति की बलि देना शुरू किया। संतों ने खुद को तपाया और अपनी इच्छाओं को मारा। अंत में अब क्या बचा है? अब हमने भगवान की ही बलि दे दी। हमने खुद पर जुर्म करने के

लिए अब पत्थर, बेवकूफी और शून्य यानी नथिंगनेस की पूजा करना शुरू कर दिया है। भगवान को शून्य के लिए कुर्बान करना यही आज की सबसे बड़ी क्रूरता है।
सबसे बड़ी क्रुलिटी है। मैं निराशावाद की गहराई में गया।

पेसिमिज्म की गहराई में। मैंने बुद्ध और शोपेन आवर से भी आगे जाकर देखा।
मैंने अच्छाई और बुराई के पार झांका। बियों्ड गुड एंड इविल। वहां मुझे एक नया आइडियल मिला। एक नया आदर्श। एक ऐसा इंसान जो इस दुनिया को पूरी तरह पसंद करता है। वह सिर्फ आज से समझौता नहीं करता। बल्कि चाहता है कि यह दुनिया बार-बार वैसे ही चले जैसी वह है। वह बार-बार वही फिर से पुकारता है। क्या यही भगवान का असली चक्कर है? जैसे जैसे इंसान की अकल बढ़ती है, उसकी दुनिया गहरी होती जाती है। उसे नए सितारे और नई पहेलियां दिखने लगती हैं। शायद एक दिन हमें भगवान और बाप जैसी बातें बच्चों के खिलौने जैसी लगे। जैसे एक बूढ़े आदमी को बच्चे का खिलौना या उसका रोना बचकाना लगता है। पर शायद उस बूढ़े आदमी के लिए फिर से कोई नया खिलौना और नया दुख जरूरी हो। इंसान हमेशा बच्चा ही रहता है। एक अमर बच्चा। क्या आपने कभी गौर किया है? असली धर्म के लिए थोड़ा खाली बैठना बहुत जरूरी है। पुराने जमाने के रईस खाली बैठने को बुरा नहीं मानते थे। उनके लिए काम करना एक शर्म की बात थी। उन्हें लगता था कि मेहनत मजदूरी शरीर और आत्मा को घटिया बना देती है। पर आजकल की यह शोर शराबे वाली और घमंडी मेहनत इंसान को नास्तिक बना रही है।

The Role of Religion, Art, and Society

जर्मनी के पढ़े लिखे लोगों के पास धर्म के लिए कोई टाइम नहीं है। उनके पास बिजनेस, मजा, न्यूज़ पेपर और फैमिली की जिम्मेदारियां है। वे सोचते हैं चर्च जाकर अपना मूड क्यों खराब करना? अगर कभी मजबूरी में उन्हें चर्च जाना

पड़े तो वे बस औपचारिकता पूरी करते हैं। आजकल के स्कॉलर्स आजकल के विद्वान खुद को बहुत बड़ा समझते हैं। वे धर्म को गंभीरता से नहीं लेते। उनकी मॉडर्न कॉन्शियंस, उनकी आधुनिक सोच उन्हें धर्म से दूर रखती है। वे धर्म को सिर्फ इतिहास की तरह देखते हैं। वे खुद को धार्मिक आदमी से ऊपर और ज्यादा समझदार

मानते हैं। पर असल में यह छोटे घमंडी लोग सिर्फ मॉडर्न आइडियाज के गुलाम मजदूर हैं। जो दुनिया को गहराई से जानता है उसे पता है कि ऊपर ऊपर से जीना कितनी बड़ी अकलमंदी है। इंसान खुद को बचाने के लिए हल्का और झूठा बन जाता है। कलाकार और फिलॉसफर जो सुंदरता की पूजा करते हैं, वे असल में गहराई में डूबने से डरते हैं। शायद उन्हें इस दुनिया से घिन आती है। इसलिए वे दुनिया को सच को बदलकर उसे सुंदर दिखाना चाहते हैं। धार्मिक लोग भी एक तरह के कलाकार ही हैं। वे सच को इसलिए बदलते हैं क्योंकि वे सच्चाई से डरते हैं। सच्चाई बहुत कड़वी

है। और इंसान अभी उसे सहने के लायक मजबूत नहीं हुआ है। धर्म का रास्ता इंसान को सुंदर दिखाने का [संगीत] सबसे अच्छा तरीका है। इंसान से प्यार करना सिर्फ भगवान की वजह से। यह अब तक का सबसे ऊंचा और अनोखा ख्याल है। बिना किसी बड़े मकसद के इंसानों से प्यार करना सिर्फ बेवकूफी और जानवरपन है। जिस भी आदमी ने पहली बार यह महसूस किया कि इंसान से प्यार करने के लिए एक ऊंचे कारण एक भगवान की जरूरत है। वह आदमी महान है। भले ही वह भटक गया हो। पर वह सबसे ऊंची उड़ान भरने वाला इंसान था। एक असली फिलॉसफर धर्म को लोगों को सिखाने

और सुधारने के लिए इस्तेमाल करता है। वह इसे राजनीति और पैसे की तरह ही एक औजार मानता है। धर्म को अलग-अलग लोगों पर अलग-अलग तरीके से इस्तेमाल किया जा सकता है। जो लोग ताकतवर और आजाद हैं उनके लिए धर्म जनता पर राज करने का एक साधन है। यह राजाओं और प्रजा को एक धागे से बांध देता है। इससे राजाओं को लोगों के दिल का हाल पता चल जाता है। ब्राह्मणों को देखो। उन्होंने धर्म का इस्तेमाल करके राजा चुने। वे खुद राजनीति की गंदगी से दूर रहे और ऊंचे मकसद के लिए काम करते रहे। धर्म कुछ लोगों को खुद पर काबू पाना और अकेले

रहना भी सिखाता है। और अंत में आम लोगों के लिए धर्म एक राहत है। यह उन्हें उनकी मजबूरी वाली हालत में भी खुश और शांत रखता है। यह उनकी मजदूरी और गरीबी को एक पवित्र रूप दे देता है। धर्म उनके दुखों पर सुनहरी धूप की तरह चमकता है। ईसाई और बौद्ध धर्म इसी कला के माहिर हैं। वे सबसे छोटे आदमी को भी यह यकीन दिला देते हैं कि उसका दुख सही और जरूरी है। सच तो यह है कि धर्म के खतरे बहुत डरावने हैं। खासकर तब जब धर्म फिलॉसफर के हाथ का औजार नहीं रहता। जब धर्म खुद मालिक बन जाता है तो भारी कीमत चुकानी पड़ती है। इंसानों में भी जानवरों की तरह बहुत से

बीमार, कमजोर और नाकाम लोग होते [संगीत] हैं। कामयाब लोग तो बस एक एक्सेप्शन है। इंसान अभी तक अपने माहौल के हिसाब से पूरी तरह ढल नहीं पाया है। इसलिए जो इंसान जितना ऊंचा होता है, उसके नाकाम होने का चांस उतना ही ज्यादा होता है। इंसानियत का सिस्टम ही ऐसा है कि वह ऊंचे लोगों को बर्बाद कर देता है। अब देखो, यह बड़े धर्म इन नाकाम लोगों के साथ [संगीत] क्या करते हैं। वे इन्हें जिंदा रखने और बचाने की पूरी कोशिश करते हैं। वे बीमारों और दुखियों का पक्ष लेते हैं। वे जीवन के हर दूसरे अनुभव को झूठा बताते हैं। भले ही यह सुनने में अच्छा लगे पर

इसी वजह से इंसान आज इस निचले लेवल पर खड़ा है। धर्म ने उन चीजों को बचा लिया जिन्हें मर जाना चाहिए था। हां क्रिश्चियनिटी ने यूरोप के बेसहारा लोगों को सहारा दिया। पर इसके पीछे उन्होंने एक डरावना काम किया। उन्होंने पूरे यूरोप की नस्ल को बिगाड़ दिया। उन्होंने सारे मूल्यों को ही उलट दिया। उन्होंने मजबूत लोगों को तोड़ दिया। उन्होंने बड़ी उम्मीदों को बर्बाद किया। उन्होंने खूबसूरती के मजे पर शक पैदा किया। उन्होंने मर्दों वाली ताकत, आजादी और जीतने की आदत को खत्म कर दिया। उन्होंने इंसान को खुद को ही चोट पहुंचाने

पर मजबूर किया। उन्होंने धरती के प्यार को धरती से नफरत में बदल दिया। चर्च का यही काम था। अगर कोई ऊपर से इस तमाशे को देखे तो वह हंसते-हंसते पागल हो जाएगा। क्या पिछले 1800 सालों से यूरोप में सिर्फ इसलिए राज किया गया ताकि इंसान को एक घटिया पैदाइश बना दिया जाए। अगर कोई असली फिलॉसफर इस बर्बादी को देखे तो वह गुस्से और नफरत में चिल्ला उठेगा। ओ अनाड़ियों तुमने मेरे सबसे कीमती पत्थर को काट काट कर क्या बना दिया? क्या यह काम तुम्हारे बस का था? क्रिश्चियनिटी का सबसे बड़ा घमंड रहा है। वे लोग जो इंसान को गढ़ने के लायक नहीं

थे। वे मालिक बन बैठे। उनमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि वे नेचर के नियम को चलने देते। जहां कमजोर खत्म हो जाता है। उन्हें ऊंचनीच का फर्क समझ नहीं आता था। उन्होंने भगवान के सामने सब बराबर का नारा दिया। इक्वलिटी बिफोर गॉड और नतीजा क्या निकला? आज का यूरोपियन इंसान एक छोटा बीमार और भीड़ में रहने वाला पालतू जानवर [संगीत] है। एक सच्चा टीचर तभी गंभीर होता है जब वह अपने चेलों के साथ हो। अपने प्यूपल्स के साथ। यहां तक कि वह खुद को भी तभी गंभीरता से लेता है। सिर्फ ज्ञान के लिए ज्ञान यह नैतिकता का आखिरी जाल है। इसमें फंसकर हम फिर से

पुराने नियमों में उलझ जाते हैं। ज्ञान का मजा बहुत कम होता अगर उसे पाने के रास्ते में इतनी शर्म ना छुपानी पड़ती। हम अपने भगवान के साथ सबसे

ज्यादा बेईमानी करते हैं। हमने उसे पाप करने की आजादी भी नहीं दी। अगर कोई इंसान खुद को लूटने, [संगीत] बेइज्जत होने या धोखा खाने देता है तो शायद वह इंसानों के बीच एक संकोची भगवान की तरह है। सिर्फ एक से प्यार करना घटियापन है। क्योंकि इसमें आप बाकी सबको छोड़ देते हैं। भगवान से प्यार भी ऐसा ही है। यादें कहती हैं कि मैंने यह किया। घमंड कहता है मैं यह नहीं कर सकता। आखिर में यादें हार मान लेती हैं। अगर तुमने वह हाथ नहीं देखा जो बड़ी नरमी से गला घोट देता है। तो तुमने जिंदगी को ठीक से नहीं देखा। अगर किसी का कोई चरित्र है तो उसके साथ वही बातें बार-बार होती हैं। जब तक तुम्हें सितारे अपने ऊपर लगते हैं तब तक तुम ज्ञानी नहीं हो। कोई बड़ा इंसान ताकत से नहीं बल्कि अपनी महान भावनाओं को लंबे समय तक बनाए रखने से बनता है। जो अपने लक्ष्य को पा लेता है, वह उसी पल उससे आगे निकल जाता है। कई मोर अपनी पूंछ सबसे छुपाते हैं और उसे अपना घमंड कहते हैं। एक जीनियस इंसान को झेलना मुश्किल है अगर उसमें दो बातें ना हो। शुक्रगुजारी यानी ग्रेटट्यूड और साफ दिल यानी परिटी। एक इंसान की कामुकता उसकी सेंसुअलिटी उसकी रूह यानी स्पिरिट की सबसे ऊंची ऊंचाइयों तक पहुंचती है। शांति के समय में लड़ने वाला इंसान खुद पर ही हमला कर देता है। इंसान अपने प्रिंसिपल से अपनी आदतों को या तो [संगीत] सही साबित करता है या छुपाता है। दो लोग एक ही प्रिंसिपल से अलग-अलग काम निकाल सकते हैं। जो खुद से नफरत करता है, वह खुद को नफरत करने वाला मानकर अपनी इज्जत भी बढ़ाता है। जिस सोल को पता है, जिस रूह को पता है कि उससे प्यार किया जाता है पर वह खुद प्यार नहीं करती। उसकी गंदगी बाहर आ ही जाती है। जिस बात का जवाब मिल जाए वह हमारे लिए बेकार हो जाती है। खुद को जानो। नो दसेल्फ का मतलब शायद यह था कि खुद की चिंता छोड़ो और बाहरी दुनिया को देखो। समंदर में प्यास से मरना डरावना है। क्या अपनी सच्चाई में इतना नमक मिलाना जरूरी है कि वह प्यास ही ना बुझा सके। सबके लिए दया सिंपैथी फॉर ऑल तुम्हारे जैसे पड़ोसी के लिए जुल्म होगा। आदत इंस्टिंक्ट जब घर में आग लगी हो तो इंसान खाना भूल जाता है। पर बाद में वह उसे राख में ढूंढ ही [संगीत] लेता है। औरत जैसेजैसे अपना जादू खोती है वैसे वैसे नफरत करना सीखती है। मर्द और औरत में भावनाएं वही है। पर उनकी रफ्तार अलग है। इसलिए वे एक दूसरे को कभी समझ नहीं पाते। औरत अपने घमंड के पीछे भी दूसरी औरतों के लिए नफरत रखती है। बंधा हुआ दिल, आजाद रूह, फ्री स्पिरिट। अगर तुम अपने दिल को कैदी बना लो तो अपनी रूह को कई आजादियां दे सकते हो। जब बहुत चालाक लोग शर्माने लगे तो उन पर शक होने लगता है। डरावने अनुभव सवाल उठाते हैं [संगीत] कि क्या वह इंसान भी डरावना है जिसके साथ यह हुआ। दुखी लोग नफरत और प्यार से थोड़े हल्के हो जाते हैं। जबकि यही चीजें दूसरों को और दुखी कर देती हैं। वह इतना ठंडा और बर्फीला है कि छूने पर हाथ जल जाए। इसलिए लोग उसे बहुत गर्म समझ लेते हैं। अपनी अच्छी इज्जत अपने गुड नेम के लिए किसने खुद की बलि नहीं दी। मिलनसार होने में नफरत नहीं है। पर इसमें लोगों के लिए बहुत तिरस्कार, बहुत कंटेंप्ट भरा होता है। समझदार होने का मतलब है मैच्योरिटी होने का मतलब है वही गंभीरता वापस पाना। जो खेलते हुए एक बच्चे में होती है। अपनी बुराई पर शर्माना एक शुरुआत है। आखिर में इंसान अपनी अच्छाई पर भी शर्माने लगता है। जिंदगी से ऐसे विदा लो जैसे [संगीत] यूलिसिस नासिका से अलग हुआ था।

उस पर प्यार लुटाने के बजाय उसे आशीर्वाद देकर क्या एक महान आदमी मुझे तो

बस वह अपने ही आइडियल का नाटक करने वाला एक्टर लगता है। जब तुम अपने कॉन्शियस को अपने जमीर को ट्रेनिंग देते हो तो वह काटते हुए तुम्हें चूमता भी है। एक दुखी इंसान ने कहा, मैं अपनी आवाज की गूंज सुनना चाहता था। पर मुझे सिर्फ तारीफ सुनाई दी। हम सब खुद को सीधा साधा दिखाने का नाटक करते हैं ताकि दूसरों से दूर रहकर आराम कर सके। एक समझदार आदमी खुद को भगवान का जानवर मान सकता है। जब प्यार बदले में मिल जाए तो मजाक किरकिरा हो जाना चाहिए। क्या वह इतनी

बेवकूफ या मामूली है कि तुमसे प्यार करती है। खुशी में खतरा। अब मेरे साथ सब अच्छा हो रहा है। मुझे अपनी किस्मत से प्यार है। अब कौन मेरी किस्मत बनेगा? आज के क्रिश्चियंस हमें जिंदा इसलिए नहीं जलाते क्योंकि वे हमसे प्यार करते हैं बल्कि इसलिए क्योंकि वह कमजोर हैं। एक फ्री स्पिरिट के लिए एक आजाद रूह के लिए पवित्र झूठ सबसे घटिया चीज है। संगीत म्यूजिक के जरिए हमारी भावनाएं हमारे पैशंस खुद का मजा लेती हैं। एक बार फैसला ले लिया तो फिर किसी की नहीं सुनना। यह एक मजबूत कैरेक्टर की निशानी है। कभी-कभी जानबूझकर बेवकूफ बनना पड़ता

है। कोई भी चीज अपने आप में मोरल नहीं होती, नैतिक नहीं होती। हम उसे अपना नजरिया देते हैं। अपराधी अक्सर अपने ही काम के बराबर नहीं होता। वह उसे छोटा दिखाने या बुरा कहने की कोशिश करता है। वकील इतने कलाकार नहीं होते कि वे जुर्म की खतरनाक खूबसूरती को अपराधी के फायदे में बदल सके। जब हमारे घमंड को चोट लगती है तो हमारी दिखावे वाली भावना और भी मजबूत हो जाती है। जो सोचने में यकीन रखता है उसे अंधविश्वासी बहुत शोर मचाने वाले और दखल देने वाले लगते हैं। क्या तुम उसे लुभाना चाहते हो? तो उसके सामने थोड़े शर्मिंदा होकर दिखाओ।

प्यार और सिख से बहुत ज्यादा उम्मीदें और औरतों की शर्म उनके नजरिए को शुरू में ही बिगाड़ देती है। जहां ना प्यार हो और ना नफरत वहां औरत का खेल बहुत मामूली होता है। जिंदगी का सबसे बड़ा समय वह है जब हम अपनी बुराई को अपनी सबसे बड़ी खूबी [संगीत] कहने की हिम्मत जुटा लेते हैं। किसी भावना को दबाने की इच्छा, किसी इमोशन को दबाने की इच्छा असल में किसी दूसरी भावना की ही जीत है। तारीफ में एक मासूमियत तब होती है जब आपको पता ना हो कि एक दिन आपकी भी तारीफ होगी। गंदगी से हमें इतनी नफरत हो सकती है कि हम खुद को साफ करना ही छोड़ दें।

कामुकता सेंसिलिटी प्यार को बहुत तेजी से बढ़ा देती है। जिससे उसकी जड़े उसकी रूट कमजोर रह जाती हैं। यह अजीब है कि भगवान ने लेखक बनने के लिए ग्रीक भाषा सीखी। पर वह उससे और बेहतर नहीं सीख पाए। तारीफ पर खुश होना अक्सर सिर्फ एक अच्छा व्यवहार है। पोलाइटनेस है ना कि घमंड। शादी ने रखैल रखने के सिस्टम को भी बिगाड़ दिया है। जो आग की लपटों में खुश होता है, वह

दर्द पर जीत नहीं पा रहा बल्कि उसे वहां दर्द महसूस नहीं हो रहा जहां उसने सोचा था। जब हमें किसी के बारे में अपनी राय बदलनी पड़ती है तो हम उसकी कीमत उस इंसान से ही

वसूलते हैं। एक देश नेचर का वह रास्ता है जिसे वह छह सात महान आदमियों तक पहुंचती है और फिर उनसे बचने का रास्ता ढूंढती है। औरत के लिए विज्ञान, औरत के लिए साइंस उनकी शर्म का दुश्मन है। उन्हें लगता है जैसे कोई उनकी खाल के नीचे झांकना चाहता है। तुम जितना मुश्किल सच अबस्ट्रैक्ट ट्रुथ सिखाना चाहते हो, तुम्हें उतना ही उसे मजेदार बनाना होगा। शैतान के पास भगवान के लिए सबसे बड़ा नजरिया है। इसलिए वह उससे दूर रहता है। शैतान ज्ञान का शैतान नॉलेज का सबसे पुराना दोस्त है। जब किसी का टैलेंट कम होता है तब पता चलता

है कि वह असल में कौन है। टैलेंट एक सजावट है और सजावट सच को छुपाती है। मर्द और औरत एक दूसरे को धोखा देते हैं। वे असल में सिर्फ खुद से या अपने सपनों से प्यार करते हैं। मर्द चाहता है कि औरत शांत रहे। और औरत बिल्ली की तरह अशांत होती है। इंसान की अपनी अच्छाइयों के लिए ही सबसे बड़ी सजा मिलती है। जिसे अपना रास्ता नहीं मिलता, वह बिना लक्ष्य वाले आदमी से भी ज्यादा बेशर्म हो जाता है। हमारी इंद्रियां ही भरोसे और सच्चाई का असली सबूत है। पाखंड कोई बुरी बात नहीं है बल्कि अच्छा होने के लिए यह एक जरूरी शर्त है।

एक अपने विचारों को जन्म देने वाला ढूंढता है। दूसरा किसी की मदद करना चाहता है। इसी से अच्छी बातचीत शुरू होती है। विद्वानों और कलाकारों के साथ हम अक्सर गलती करते हैं। एक बड़े विद्वान में, एक बड़े स्कॉलर में, अक्सर एक मामूली आदमी मिलता है। और एक मामूली कलाकार में, एक बड़ा आदमी। जागते हुए भी हम वही करते हैं जो सपने में करते हैं। हम लोगों के बारे में सिर्फ कल्पना करते हैं और फिर भूल जाते हैं। बदले और प्यार में औरत मर्द से ज्यादा खतरनाक होती है। सलाह एक पहेली की तरह। अगर बंधन को मजबूत रखना है तो उसे पहले काटो।

Aphorisms on Wisdom, Love, and the Human Condition

पेट ही वह वजह है जिसकी वजह से इंसान खुद को भगवान नहीं समझ पाता। सबसे पवित्र बात जो मैंने सुनी सच्चे प्यार में रूह शरीर को घेर लेती है। हमारा घमंड चाहता है कि जो हम सबसे अच्छा करते हैं, वह लोगों को सबसे मुश्किल लगे। जब कोई औरत बहुत पढ़ाकू बनने लगती है स्कॉलरली तो उसकी सेक्स वाली कुदरत उसके सेक्सुअल नेचर में कुछ गड़बड़ है। बांझपन इंसान को मर्दानी सोच की तरफ ले जाता है। औरत को सजने सवरने का शौक इसलिए है क्योंकि उसे पता है कि उसका रोल दूसरे नंबर का ही है। राक्षसों से लड़ने वालों को सावधान रहना चाहिए। कहीं तुम खुद राक्षस ना बन जाओ।
अगर तुम बहुत देर तक किसी गहरी खाई में झांकोगे तो वह खाई भी तुम्हारे अंदर झांकने लगेगी। पुरानी कहानियों और जिंदगी का सच अच्छी औरत हो या बुरी उसे डंडे की जरूरत होती है। पहले दूसरों को अपने बारे में अच्छी राय बनाने के लिए फंसाना। फिर खुद ही उनकी उस राय पर यकीन कर लेना। यह जादू औरतों से बेहतर कौन कर सकता है? आज जिसे बुरा कहा जाता है, वह असल में पुराने समय की अच्छाई की गूंज है। यह पुराने आदर्शों की एक पुरानी छाप है। हीरो के आसपास सब कुछ दुख भरा हो जाता है। आधे भगवान के आसपास सब मजाक बन जाता है। और भगवान के आसपास शायद सब कुछ बस एक दुनिया बन जाता है। सिर्फ टैलेंट होना काफी नहीं है। दुनिया से उसे रखने की परमिशन भी लेनी पड़ती है। है ना दोस्तों? जहां ज्ञान का पेड़ है, वहीं स्वर्ग है। यह बात पुराने और नए दोनों तरह के सांप कहते हैं। जो काम प्यार की वजह से किया जाता है, वह हमेशा अच्छाई और बुराई के पार होता है। बिय्ड गुड एंड इविल। सवाल उठाना, बचना। मजेदार शक और मजाक उड़ाना। यह सब सेहत की निशानी है। जो चीज बिल्कुल पक्की

होने का दावा करती है, वह बीमारी है। दुख का एहसास, ट्रेजिक सेंस आपकी कामुकता, आपके सेंसनेस के साथ बढ़ता और घटता है। अकेले आदमी का पागल होना कम ही दिखता है। पर ग्रुप, पार्टी, देश और पूरे समय का पागल होना एक आम बात है। खुदकुशी, सुसाइड का ख्याल बहुत सुकून देता है। इसके सहारे कई बुरी रातें आसानी से कट जाती हैं। हमारी अकल ही नहीं बल्कि हमारा जमीर भी हमारी सबसे मजबूत इच्छा के आगे घुटने टेक देता है। हमारे अंदर का तानाशाह सबसे बलवान है। अच्छाई का बदला अच्छाई से और बुराई का बुराई से देना जरूरी है। पर उसी इंसान को क्यों जिसने हमारे साथ वैसा किया? जब आप अपना ज्ञान, अपना नॉलेज दूसरों को दे देते हैं तो आपको उससे पहले जैसा प्यार नहीं रहता। कवि अपने अनुभवों के साथ बहुत बेशर्मी करते हैं। वे उनका फायदा उठाते हैं। हमारा साथी जीव हमारा पड़ोसी नहीं है बल्कि पड़ोसी का पड़ोसी अपना है। हर देश ऐसा ही सोचता है। प्यार प्रेमी की छिपी हुई खूबियों को बाहर ले आता है। जो अनोखी बातें उसमें कभी कभार दिखती हैं। इसलिए प्यार किसी के असली चरित्र के बारे में धोखा दे सकता है। ईसा मसीह ने यहूदियों से कहा कानून गुलामों के लिए था। भगवान से वैसे प्यार करो जैसे मैं करता हूं। उसके बेटे की तरह हम भगवान के बेटों की नैतिकता से क्या लेना देना? हर पार्टी का सच चरवाहे को हमेशा एक लीडर भेड़ चाहिए या फिर उसे खुद कभी-कभी भेड़ बनना पड़ता है। कोई मुंह से झूठ बोल सकता है पर चेहरे की बनावट सच बता ही देती है। ताकतवर मर्दों के लिए नजदीकी शर्म की [संगीत] बात है। इंटिमसी शर्म की बात है और बहुत कीमती भी। ईसाई धर्म क्रिश्चियनिटी ने कामदेव को जहर पिलाया। वह मरा तो नहीं पर एक बुराई बन गया। अपने बारे में बहुत ज्यादा बातें करना भी खुद को छुपाने का एक तरीका है। बुराई से ज्यादा तारीफ में दखल अंदाजी होती है। एक ज्ञानी आदमी के लिए दया बहुत मजाकिया चीज है। यह वैसा ही है जैसे किसी दानव पर कोमल हाथ रखना।

कभी-कभी हम पूरी इंसानियत से, प्यार की वजह से किसी एक को गले लगा लेते हैं। पर यह बात उस इंसान को कभी नहीं बतानी चाहिए। हम तब तक नफरत नहीं करते जब तक हम सामने वाले को घटिया समझते हैं। नफरत तभी होती है जब हम उसे अपने बराबर या ऊपर मानते हैं। ओ फायदे की बात करने वालों तुम भी फायदे से प्यार सिर्फ अपनी पसंद पूरी करने के लिए करते हो। तुम्हें भी इसके शोर से नफरत है। आखिर में इंसान अपनी इच्छाओं से प्यार करता है। उस चीज से नहीं जिसे वह पाना चाहता है। दूसरों का दिखावा हमें तभी बुरा लगता है जब वह हमारे अपने दिखावे के खिलाफ हो।

ईमानदारी क्या है? इस बारे में आज तक कोई भी पूरी तरह ईमानदार नहीं रहा है। हम समझदार लोगों की बेवकूफी पर यकीन नहीं करते। यह तो इंसानी अधिकारों का अपमान है। हमारे कामों के नतीजे हमें हमारी चोटी से पकड़ लेते हैं। उन्हें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि अब हम सुधर चुके हैं। झूठ बोलने में भी एक मासूमियत होती है। एक इनोसेंस या किसी बड़े मकसद में पक्के भरोसे की निशानी है। जब कोई तुम्हें गाली दे रहा हो तब उसे आशीर्वाद देना इंसानियत के खिलाफ है। अपने से ऊंचे लोगों की बेतलूफी कड़वाहट पैदा करती है क्योंकि आप उनके साथ वैसा व्यवहार वापस

नहीं कर सकते। मुझे दुख इसलिए नहीं है कि तुमने मुझे धोखा दिया। दुख इसलिए है कि अब मैं तुम पर कभी यकीन नहीं कर पाऊंगा। दया में भी एक ऐसा घमंड होता है जो बुराई जैसा दिखता है। मैं उसे नापसंद करता हूं। [संगीत] क्यों? क्योंकि मैं उसके मुकाबले का नहीं हूं। क्या किसी ने कभी ऐसा सच बोला है? आज यूरोप में सही और गलत की समझ बहुत बारीक हो गई है। पर इसकी पढ़ाई अभी बहुत कच्ची और भद्दी है। नैतिकता का विज्ञान बोलना बहुत घमंड वाली बात है। अभी तो हमें बस पुरानी आदतों और पसंद नापसंद की जानकारी इकट्ठा करनी चाहिए। पुराने फिलॉसफर्स बहुत सीरियस होने का

नाटक करते थे। वे नैतिकता को एक आधार एक बेसिस देना चाहते थे। पर वे खुद नैतिकता को बस एक दी हुई चीज मानते थे। उन्हें दुनिया के अलग-अलग देशों और समय के बारे में कुछ पता नहीं था। वे बस अपने आसपास की बातों को सच मान लेते थे। शपेन हावर कहते हैं किसी को दुख मत दो। सबकी मदद करो। यह बात बिल्कुल बकवास और सेंटीमेंटल है। दुनिया तो ताकत की चाहत है। विल टू पावर है। और शोपेन हावर्स तो रोज खाना खाने के बाद बांसुरी बजाते थे। क्या वह सच में दुनिया से नफरत करने वाले थे? क्या वह पेसिमिस्ट थे? अगर कोई कहे मेरे अंदर एक पक्का नियम है,

एक कैटेगोरिकल इंपरेटिव है। तो असल में वह अपने बारे में कुछ बता रहा है। कुछ लोग अपनी इज्जत बचाने के लिए नियम बनाते हैं। कुछ खुद को शांति देने के लिए। कुछ खुद को सजा देने के लिए तो कुछ बदला लेने के लिए। कुछ लोग खुद को छुपाने के लिए नैतिकता का इस्तेमाल करते हैं। इमैनुअल कांट अपनी नैतिकता से कहता है मुझे हुकुम मानना पसंद है और तुम सबको भी यही करना होगा। असल में यह सारे नियम सिर्फ आपकी भावनाओं की एक भाषा है। साइन लैंग्वेज ऑफ इमोशंस। हर नैतिकता, नेचर और रीजन पर एक तरह का जुल्म है। पर इसमें कोई बुराई नहीं है। हर नैतिकता की

सबसे कीमती बात यह है कि वह आपको लंबे समय तक एक ही रास्ते पर चलने को मजबूर करती है। जैसे कविता में तुकबंदी और लय का जुलम होता है। राइम और रिदमम का इसी पाबंदी से ही आजादी खूबसूरती और नाच पैदा होता है। जिंदगी को जीने लायक बनाने के लिए जरूरी है कि लंबे समय तक एक ही दिशा में हुकुम माना जाए। यूरोप का दिमाग इसी पाबंदी और सख्ती से मजबूत और तेज बना है। नेचर का नियम यही है। किसी का हुकुम मानो और लंबे समय तक मानो। वरना तुम खुद को और अपनी इज्जत को खो दोगे। यह नियम किसी एक इंसान के लिए नहीं बल्कि पूरी नस्ल और इंसानियत के लिए

है। छोटी सी बेवकूफी और कम नजरिया नैरोइंग ऑफ पर्सेक्टिव्स जिंदगी के विकास के लिए जरूरी है। मेहंती नस्लों को खाली बैठना बहुत अखरता है।

अंग्रेजों ने रविवार को इतना बोरिंग और उदास बना दिया ताकि अंग्रेज फिर से अपने काम के दिनों के लिए तरसने लगे। यह एक तरह का उपवास है, फास्ट है। अपनी आदतों को और मजबूत बनाने के लिए ऐसे उपवास जरूरी हैं। इसी तरह ईसाई धर्म के भारी दबाव की वजह से ही सेक्स वाली कुदरती आदत, सेक्सुअल इंपल्स सुधर कर प्यार में बदल गई। प्लेटो की नैतिकता में कुछ ऐसा है जो उसका अपना नहीं है। यह सुकरात वाली सोच है।

प्लेटो इसके लिए बहुत ऊंचे दर्जे का आदमी था। सुकरात की लॉजिक क्या थी? सोक्रेटीज का लॉजिक क्या था? कोई भी जानबूझकर अपना बुरा नहीं करना चाहता। इसलिए बुराई सिर्फ अनजाने में होती है। बुरा आदमी खुद को चोट पहुंचाता है। अगर उसे पता होता कि बुराई क्या है तो वह ऐसा नहीं करता। इसलिए बुरा आदमी सिर्फ गलती की वजह से बुरा है। यह सोचने का तरीका आम जनता जैसा है। वह सिर्फ बुराई के बुरे नतीजों को देखते हैं। उनका मानना है कि गलत काम करना बेवकूफी है। वे अच्छाई को फायदे से जोड़ देते [संगीत] हैं। प्लेटो ने अपने उस्ताद की इन बातों

में बड़ी-बड़ी और नेक बातें घुसाने की कोशिश की। उसने सुकरात को गली मोहल्ले से उठाकर एक नया रूप दे दिया। प्लेटो सबसे बड़ा मतलब निकालने वाला था। इंटरप्रेटर था। उसने सुकरात को अपने ही नकाब पहना दिए। श्रद्धा और ज्ञान फथ और नॉलेज का पुराना झगड़ा है। यानी कुदरती आदत और अकल की लड़ाई। नेचुरल इंस्टिंक्ट और रीजन की लड़ाई। क्या हमें अपनी कुदरती आदतों की बात माननी चाहिए? या फिर अकल यानी रीजन की जो हर काम के पीछे क्यों ढूंढती है? व्हाई? यह समस्या सबसे पहले सोक्रेटीज में दिखी थी। सुकरात ने रीजन का साथ दिया। उसने

पूरी जिंदगी उन नेक लोगों का मजाक उड़ाया जो अपनी कुदरती आदतों से अपने नेचुरल इंस्टिंक्ट से काम करते थे। पर आखिर में वह खुद पर भी हंसा। उसने देखा कि वह खुद भी बिना नेचुरल इंस्टिंक्ट्स के नहीं रह सकता। उसने एक चालाकी की। उसने कहा, "हें अपनी आदतों और अकल को एक साथ लाना चाहिए। आदतों को मानो, पर अकल से उन्हें सही साबित करो।" यह उस महान धोखेबाज की असलियत थी। प्लेटो ने तो और भी जोर लगाया। उसने साबित करने की कोशिश की कि अकल और आदत दोनों एक ही जगह पहुंचती हैं। अच्छाई या भगवान तक। तब से लेकर आज तक धर्म और दर्शन में

Perspectives on Women, Power, and Cultural Identity
कुदरती आदतों की ही जीत हुई है। इसे ईसाई श्रद्धा कहते हैं। और मैं इसे भेड़चाल कहता हूं। हमारी इंद्रियां बहुत देर से और बहुत कम सच सीखती हैं। हमारी आंखें नया देखने के बजाय वही पुराना चित्र देखना पसंद करती हैं जो उन्हें पहले से पता है। हमारे कान नई धुन को ठीक से नहीं सुन पाते। जब हम कोई नई भाषा सुनते हैं तो हम अनजाने में उसे अपने जाने पहचाने शब्दों में बदलने की कोशिश करते हैं। हमारी इंद्रियां नई चीजों की दुश्मन है। हम डर, प्यार, नफरत और आलस के गुलाम है। जैसे कोई पाठक पेज का हर शब्द नहीं पढ़ता बल्कि 20 में से पांच शब्द चुनकर बाकी का अंदाजा लगा लेता है। वैसे ही हम किसी पेड़ को पूरा नहीं देखते। हम बस एक पेड़ की कल्पना कर लेते हैं। हम अपने अनुभवों का ज्यादातर हिस्सा खुद गढ़ते हैं। सच तो यह है कि हम पुराने समय से झूठ बोलने के आदि रहे हैं। या फिर इसे इज्जत से कहें तो हम अपनी सोच से कहीं बड़े कलाकार हैं। कभी-कभी मैं बात करते समय सामने वाले के चेहरे पर वह भाव देख लेता हूं जो शायद वहां थे ही नहीं। मैंने उन्हें अपनी सोच से गढ़ा होता है, इमेजिन होता है। जो हम सपनों में महसूस करते हैं, वह हमारी सोल का, हमारी रूह का हिस्सा बन जाता है।

इससे हम अमीर या गरीब महसूस कर सकते हैं। सपनों की आदतें हमारी जागती हुई जिंदगी पर भी राज करती हैं। मान लो कोई अपने सपनों में अक्सर उड़ता है। वह उड़ने की कला को अपनी ताकत और अपनी खुशी मानने लगता है। ऐसा आदमी जो सपनों में भगवान जैसी फुर्ती महसूस करता है। बिना किसी मेहनत के ऊपर जाना बिना किसी तकलीफ के नीचे [संगीत] आना। वह आदमी जागने के बाद खुशी को अलग नजरिए से देखेगा। उसके लिए कवियों द्वारा बताई गई उड़ान बहुत भारी और तकलीफ देह

होगी। उसकी खुशी की चाहत ही बदल जाएगी। इंसानों के बीच फर्क सिर्फ उनकी पसंद में नहीं होता। फर्क इसमें होता है कि वे किसी चीज को पाना किसे कहते हैं? हैविंग एंड पोज़ेसिंग। एक औरत के मामले में एक मामूली मर्द के लिए सिर्फ उसके शरीर पर काबू होना ही कब्जा है। पर एक शक करने वाला और लालची मर्द इसे अधूरा मानेगा। वह चाहेगा कि औरत उसके लिए अपनी हर चीज कुर्बान कर दे। तब उसे लगेगा कि उसने उसे पा लिया है। पर एक तीसरा आदमी और भी आगे जाएगा। वह पूछेगा कहीं यह औरत मेरे किसी नकाब से तो प्यार नहीं कर रही। वह चाहेगा कि औरत उसकी हर बुराई और उसकी रूह को जानकर भी उससे प्यार करे। तभी उसे लगेगा कि वह औरत उसकी है।

यही बात देश को पाने के लिए भी है। कुछ लोग मदद भी इसलिए करते हैं ताकि वे मदद लेने वाले पर अपना कब्जा कर सके। वे उस पर अपना हक जताते हैं। मां-बाप भी बच्चों को अपने जैसा बनाना चाहते हैं। जिसे वे एजुकेशन कहते हैं। शिक्षा वे बच्चे को अपनी जायदाद समझते हैं। पुराने जमाने में पिताओं को तो बच्चे को मारने तक का हक था। उस्ताद, पुजारी और राजा सब एक नए इंसान को सिर्फ एक नए कब्जे की तरह देखते हैं। सूरज के पास बहुत सी ऐसी काली चीजें हैं जिन्हें हम कभी नहीं देख सकते। यह एक इशारा है। नैतिकता को समझने वाला इंसान इन

इशारों की भाषा को पढ़ता है। बहुत सी बातें अनकही रह जाती हैं। लोग शिकारी जानवरों और शिकारी इंसानों को गलत समझते हैं। उन्हें बीमार कहना गलत है। वह तो सबसे सेहतमंद लोग हैं। पुराने दार्शनिक कुदरत के इस कच्चे और असली रूप से डरते हैं। वे चाहते हैं कि सब मामूली और शरीफ रहे। यह नैतिकता असल में डर का दूसरा नाम है। खुशी पाने के लिए जो भी नियम बनाए गए हैं वे और कुछ नहीं बल्कि डर से बचने के तरीके हैं। अपनी भावनाओं को काबू में रखने के नुस्खे। यह सब पुरानी और बासी दवाओं की तरह है। यह सबको एक जैसा बनाने की कोशिश करती हैं।

जैसे स्टोइक्स ने भावनाओं को ठंडा कर दिया। स्पिनोजा ने भावनाओं की चीर फाड़ की। एरिस्टोटलल ने उन्हें बीच का बना दिया। यह सब डर की वजह से है। कुछ मजबूत लोग जैसे हाफिज या गेटे अपनी भावनाओं को आजाद छोड़ देते हैं क्योंकि वे डरते नहीं। पर बाकी सबके लिए नैतिकता सिर्फ एक बुझदिली है। एक टिडिटी, एक डर। इंसान हमेशा से झुंड में रहा है। बहुत सारे लोग हुकुम मानते हैं और थोड़े हुकुम देते हैं। इसलिए हुकुम मानना अब इंसान की आदत बन गया है। इंसान का जमीर इंसान का कॉन्शियंस बस हुकुम मानना चाहता है। वह मां- बाप, टीचर या समाज की बात को

आंख मूंदकर मान लेता [संगीत] है। आज यूरोप में जो हुकुम देते हैं वे भी नाटक करते हैं कि वे सिर्फ कानून या जनता की सेवा कर रहे हैं। यह उनकी नैतिकता का पाखंड है। वे खुद को असली मालिक कहने से डरते हैं। ऐसे में नेपोलियन

जैसे आजाद इंसान का आना एक बड़ा वरदान था। जब अलग-अलग नस्लें आपस में मिल जाती हैं तो इंसान के अंदर एक जंग शुरू हो जाती है। उसके अंदर अलग-अलग और उल्टी आदतें होती हैं। ऐसा इंसान कमजोर होता है और सिर्फ शांति चाहता है। वह आराम की खुशी ढूंढता है। वह चाहता है कि उसके अंदर की जंग खत्म हो जाए। पर कुछ ऐसे अनोखे लोग भी होते हैं जो इस अंदरूनी लड़ाई का इस्तेमाल करते हैं। वे खुद पर काबू रखते हैं और दुनिया को जीतते हैं। जैसे सीजर या लनार्डो द विंच। जब तक नैतिकता सिर्फ समाज को बचाने के लिए है तब तक पड़ोसी से प्यार असल में पड़ोसी से डर है। पहले जो मजबूत आदतें जैसे बदला लेना, चालाकी या ताकत की चाहत समाज को बचाने के लिए जरूरी थी। अब उन्हें बुरा कहा जाता है। [संगीत] क्यों? क्योंकि अब समाज उनसे डरता है। जो इंसान सीधा शरीफ और मामूली है [संगीत] उसे नेक माना जाता है। आज समाज अपराधियों पर भी दया करता है क्योंकि वह सजा देने से डरता है।

यूरोप में जिसे तरक्की कहा जाता है जिसे प्रोग्रेस वह और कुछ नहीं बल्कि डर को पूरी तरह खत्म करने की चाहत है। वे चाहते हैं कि अब किसी से डरने की जरूरत ना रहे। वही बात फिर से कहूंगा जो 100 बार कह चुका हूं। आजकल के लोगों को हमारा सच सुनना पसंद नहीं है। इंसान को जानवरों की गिनती में रखना लोगों को बहुत बुरा लगता है। खासकर नए विचारों वाले लोगों को भेड़ या भेड़चाल कहना उन्हें एक जुर्म लगता है। पर हम क्या करें? यही हमारा नया नजरिया है। पूरे यूरोप की सोच अब एक जैसी हो गई है। सोक्रेटीज सुकरात जिस बात को नहीं जानता था, आज के लोग उसे जानने का दावा करते हैं। वे कहते हैं कि उन्हें पता है कि अच्छा और बुरा क्या है। पर सच तो यह है कि यह सिर्फ एक झुंड में रहने वाले जानवर की सोच है। आज यूरोप की नैतिकता सिर्फ भेड़चाल वाली नैतिकता बनकर रह गई है। यह सिर्फ एक तरह की सोच है। इससे पहले भी और इसके बाद भी और भी ऊंची सोच और भी हायर मोरलिटीज पॉसिबल है। पर आज की यह सोच बहुत जिद्दी है। यह कहती है सिर्फ मैं ही सही हूं। बाकी सब गलत है। लोकतंत्र यानी डेमोक्रेटिक मूवमेंट। असल में ईसाई धर्म की ही विरासत है। उसी की इन्हहेरिटेंस है।

सोशलिस्ट और अनार्किस्ट भी इसी झुंड का हिस्सा है। वे एक ऐसा आजाद समाज चाहते हैं। एक ऐसी फ्री सोसाइटी जहां कोई मालिक और नौकर ना हो। वे हर खास हक के खिलाफ हैं। वे सब प्रिविलेजेस के खिलाफ हैं। वे सबको बराबर करना चाहते हैं। उन्हें दुख से नफरत है। वे यूरोप को एक नए बुद्ध धर्म, एक नए बुद्धिज्म की तरफ ले जा रहे हैं। जहां सब बस एक दूसरे पर दया करेंगे। वे सिर्फ झुंड और खुद पर भरोसा करते हैं। हम लोग अलग हैं। हम लोकतंत्र को इंसानियत की गिरावट मानते हैं। यह इंसान को मामूली और घटिया बनाने का तरीका है। तो हमारी

उम्मीद कहां है? हमारी उम्मीद सिर्फ न्यू फिलॉसोफर्स में है। नए दार्शनिकों में है। हमें ऐसे मजबूत दिमाग चाहिए जो पुरानी कीमतों को बदलकर नया नजरिया दें। जो आने वाले हजारों सालों के लिए नए रास्ते बनाए। अब इंसान के भविष्य को इंसान की अपनी मर्जी के हिसाब से चलना होगा। हमें उस बेवकूफी

और इत्तेफाक को खत्म करना होगा जिसे लोग इतिहास कहते हैं। हमें ऐसे लीडरों की जरूरत है जिनकी अंतरात्मा पत्थर जैसी मजबूत स्टील्ड कॉन्शियंस और दिल [संगीत] पीतल जैसा हो। वह इतनी बड़ी जिम्मेदारी उठा सके। हमें डर है कि अगर ऐसे लीडर नहीं

मिले तो इंसानियत का क्या होगा? जब एक महान इंसान रास्ता भटक जाता है तो बहुत दुख होता है। पर सबसे बड़ा डर तो यह है कि पूरी इंसानियत ही घटिया हो जाए। यूनिवर्सल डीजनरेसी। सोशलिस्ट मूर्ख चाहते हैं कि सब बराबर और पालतू जानवर बन जाए। वे इंसान को एक बोना बनाना चाहते हैं। जिसके पास बराबर के हक हो। जो इस खतरे को समझता है उसे एक नई नफरत महसूस होती है और उसे अपना नया मिशन मिल जाता है। मैं एक बड़ी गड़बड़ के खिलाफ आवाज उठाना चाहता हूं। आजकल विज्ञान खुद को फिलॉसोफी से बड़ा समझने लगा है। यह एक खतरनाक बदलाव है।

The Dangers of Modern Thought and the Genius of Philosophy

पढ़े लिखे लोग आजकल बहुत घमंडी हो गए हैं। वे सोचते हैं कि वे आजाद
हैं। यह सब लोकतंत्र का बुरा असर है। विज्ञान पहले धर्म का गुलाम था। अब वह आजाद होकर फिलॉसफी पर राज करना चाहता है। मेरी यादों में कई ऐसे मजदूर जैसे पढ़े लिखे लोग हैं जो फिलॉसफी का मजाक उड़ाते हैं। कोई कहता है कि फिलॉसफी सिर्फ पुरानी और गलत बातों का ढेर है। किसी को इसमें रहस्यवाद मिस्टिसिज्म का डर लगता है। शोपेनवर ने जर्मन संस्कृति को बिगाड़ दिया क्योंकि उसने हेगल के खिलाफ गुस्सा फैलाया। आज के दार्शनिक भी बहुत मामूली हो गए हैं। जो खुद को रियलिस्ट या पॉजिटिविस्ट कहते

हैं, वे असल में सिर्फ छोटे वैज्ञानिक हैं। फिलॉसफी अब सिर्फ ज्ञान के सिद्धांत, थ्योरी ऑफ नॉलेज तक सिमट गई है। यह अपनी आखिरी सांसे गिन रही है। ऐसी कमजोर चीज दुनिया पर राज कैसे कर सकती है? एक फिलॉसफर बनने के रास्ते में आजकल बहुत खतरे हैं। विज्ञान का ढांचा इतना बड़ा हो गया है कि सीखते सीखते ही इंसान थक जाता है। वह किसी एक छोटी चीज में फंस कर रह जाता है। स्पेशलाइजेशन में वह कभी ऊंचाई तक पहुंच ही नहीं पाता। [संगीत] जहां से वह पूरी दुनिया को देख सके। अगर वह ऊंचाई पर पहुंचता भी है तो बहुत देर हो चुकी होती है। तब तक उसकी जवानी और

ताकत खत्म हो जाती है। उसकी अपनी ईमानदारी ही उसे रोकती है। उसे डर लगता है कि कहीं वह सिर्फ ऊपरी दिखावा करने वाला ना बन जाए। लोग सोचते हैं कि बुद्धिमानी का मतलब है दुनिया की मुश्किलों से भागना। पर एक असली दार्शनिक, एक जेन्युइन फिलॉसफर तो कभी बुद्धिमान या सावधान नहीं होता। वह खुद को हर पल खतरे में डालता है। वह जिंदगी के इस गंदे खेल को पूरे जोश के साथ खेलता है। जीनियस वह है जो कुछ नया पैदा [संगीत] करता है। इसके मुकाबले एक पढ़ा लिखा विद्वान एक कुंवारी बुढ़िया जैसा है। वह कुछ भी नया पैदा नहीं कर सकता।

विद्वान लोग बहुत मामूली होते हैं। उनमें कोई अथॉरिटी नहीं होता। वे बस मेहनत करना और हुकुम मानना जानते हैं। उन्हें सिर्फ अपनी तारीफ और इज्जत की चिंता होती है। इन विद्वानों में एक घटिया जलन होती है। वे महान लोगों की कमजोरियां ढूंढने में माहिर होते हैं। उनकी आंखें एक सूखे तालाब की तरह होती हैं। जिनमें कोई जोश नहीं होता। सबसे खतरनाक बात यह है कि यह मामूली लोग हर खास आदमी को बर्बाद करना चाहते हैं। वे हर तनी हुई कमान को ढीला करना चाहते हैं। वे बड़े प्यार से और हमदर्दी दिखाकर अपनी ताकत को खत्म कर देते हैं।

हमें बाहर की चीजों को देखने वाले स्वभाव का शुक्रगुजार होना चाहिए। पर इसे जरूरत से ज्यादा सिर पर नहीं चढ़ाना चाहिए। आजकल लोग इसे मोक्ष या महानता मान रहे हैं। खासकर वे लोग जो दुनिया से परेशान है। असली पढ़ा लिखा आदमी एक असली ऑब्जेक्टिव मैन एक बहुत कीमती औजार है। पर वह सिर्फ एक औजार है। वह एक आईना है। वह खुद में कोई मकसद नहीं है। वह एक ऐसा आईना है जो हर उस चीज के आगे झुक जाता है जिसे जाना जा सकता है। वह बस इंतजार करता है कि कोई आए और उसकी सतह पर अपनी छाप छोड़ जाए। उसकी अपनी कोई पहचान नहीं बची है। उसे खुद

की याद बड़ी मुश्किल से आती है। वह अक्सर अपनी ही जरूरतों को भूल जाता है। वह अपनी पत्नी या दोस्त के दुखों को भी बस एक केक की तरह देखता है। कल क्या करना है उसे आज भी नहीं पता। वह शांत इसलिए नहीं है कि उसे कोई दुख नहीं है बल्कि इसलिए है क्योंकि वह अपने दुख को पकड़ने के लायक ही नहीं बचा। अगर तुम उससे प्यार या नफरत की उम्मीद करोगे तो वह कुछ ना कुछ दिखावा जरूर करेगा। पर वह सब नकली होगा। सब आर्टिफिशियल। वह तभी असली लगता है जब वह आईना बना रहता है। वह ना तो हुकुम देता है ना ही कुछ तबाह करता है। वह सबको [संगीत] आदर देता

है क्योंकि उसे किसी से मतलब ही नहीं है। उसे दार्शनिक समझना उसे फिलॉसफर समझना बहुत बड़ी गलती है। दार्शनिक तो वह तानाशाह है जो सभ्यता को गढ़ता है। यह आईना आदमी तो बस एक महान गुलाम है। वह बहुत कीमती और नाजुक यंत्र है। पर वह कोई मंजिल नहीं है। वह खुद में कुछ भी नहीं है। एकदम खाली। इसलिए

औरतों को ऐसे आदमी पसंद नहीं आते। आजकल अगर कोई दार्शनिक कहे कि वह शक करने वाला नहीं है तो लोग डर जाते हैं। उन्हें लगता है कि वह कोई धमाका करने वाला है। जैसे कोई डायनामाइट ऑफ दिस स्पिरिट। इस डर को सुलाने के लिए लोग शक [हंसी]

यानी स्केप्टिसिज्म का सहारा लेते हैं। यह एक मीठी अफीम की तरह है। यह दिमाग के शोर को शांत कर देती है। शक करने वाला आदमी बहुत डरपोक होता है। उसे हां या ना कहने से डर लगता है। वह मॉनटेन की तरह कहता है। मुझे क्या पता या सुकरात की तरह मैं जानता हूं कि मैं कुछ नहीं जानता। असल में यह शक नसों की कमजोरी की निशानी है। जब अलग-अलग नस्लें और क्लास आपस में मिल जाते हैं तो खून में बेचैनी आ जाती है। इंसान की मर्जी उसकी विल बीमार हो जाती है। उसे फैसला लेने में डर लगता है। आज पूरे यूरोप को पैरालिसिस ऑफ विल मार गया है। इच्छा शक्ति का लकवा मार गया है।

लोग इसे वैज्ञानिक सोच या ऑब्जेक्टिविटी का नाम देकर सजाते हैं। यह बीमारी फ्रांस में सबसे ज्यादा है क्योंकि वहां की सभ्यता सबसे पुरानी है। जर्मनी में मर्जी थोड़ी मजबूत है और इंग्लैंड या स्पेन में और भी ज्यादा पर सबसे खतरनाक मर्जी विल रूस में पल रही है। वहां ताकत की चाहत विल टू पावर दबाकर रखी गई है। वह कभी भी फट सकती है। यूरोप को इस खतरे से बचने के लिए अपनी छोटी राजनीति छोड़नी होगी। उसे एक मजबूत मर्जी एक वन विल बनानी होगी। एक ऐसा नया शासक वर्ग, न्यू कैसल चाहिए जो हजारों सालों की सोच सके। अब दुनिया पर राज करने की बड़ी

राजनीति का समय आ गया है। यूरोप में अब लड़ाई वाला नया समय शुरू हो गया है। इससे एक नए और मजबूत शक का जन्म होगा। पुरुषिया के पुराने राजा फ्रेडरिक विलियम वन को देखो। वह बड़े और हैंडसम सैनिकों का दीवाना था। उसने अपने बेटे फ्रेडरिक द ग्रेट को हमेशा नफरत की नजरों से देखा। उसे डर था कि उसका बेटा मर्दाना नहीं है। उसे लगा बेटा नास्तिक और कमजोर फ्रेंच लोगों जैसा बन गया है। उसे लगा बेटे का दिल अब मजबूत नहीं रहा और वह हुकुम नहीं दे पाएगा। पर वह राजा गलत था। उसके बेटे के अंदर एक नया और खतरनाक [हंसी] शक पल रहा था। यह शक

लड़ाई और जीत से जुड़ा था। यह शक चीजों को सिर्फ देखता नहीं उन पर कब्जा करता था। यह मर्जी को आजादी देता है पर दिल पर सख्त पहरा रखता है। यही असली जर्मन अंदाज है। यह उस पुरानी सोच के खिलाफ है जो कहती थी कि जर्मन लोग सिर्फ कोमल और कवि किस्म के बेवकूफ है। जब नेपोलियन ने गेटे को देखा तो वह दंग रह गया। उसने कहा देखो यह है एक मर्द। मुझे तो लगा था मैं सिर्फ एक जर्मन देखूंगा। भविष्य के दार्शनिक भी इसी तरह के शक करने वाले होंगे। वे खुद को क्रिटिक कह सकते हैं। वे पक्का एक्सपेरिमेंट करने वाले लोग होंगे। वे ज्ञान के लिए इतने खतरनाक और दर्दनाक काम

करेंगे कि आज के कमजोर लोग डर जाए। उनके पास अपने खुद के मजबूत स्टैंडर्ड्स होंगे। वे अकेले रहने और अपनी जिम्मेदारी खुद उठाने वाले लोग होंगे। उन्हें पुरानी सोच की काटपीट करने और ना कहने में मजा आएगा। वे कोमल लोगों के लिए बहुत सख्त होंगे। वे सच्चाई का साथ इसलिए नहीं देंगे कि वह उन्हें सुकून दे या जोश भरे। वे उन लोगों पर हसेंगे जो कहते हैं यह ख्याल मुझे अच्छा लगा तो यह सच ही होगा। उन्हें इन आइडियलिस्टिक इन आदर्शवादी और कमजोर बातों से घिन आएगी। आज के लोग सोचते हैं कि फिलॉसफी सिर्फ क्रिटिसिज्म है। आलोचना है। पर हमारे नए

फिलॉसफर्स कहेंगे। क्रिटिक सिर्फ फिलॉसफर्स के औजार हैं। इमैनुअल कांट भी सिर्फ एक बड़ा क्रिटिक ही था। मैं फिर कह रहा हूं पढ़ने लिखने वाले मजदूरों को फिलॉसोफिकल वर्कर्स को असली फिलॉसफर समझने की गलती मत करो। सबको उनका सही हक दो। एक असली फिलॉसफर को अपनी पढ़ाई के दौरान इन सब सीढ़ियों से गुजरना पड़ता है। उसे क्रिटिक, इतिहासकार, कवि और ज्ञानी बनना पड़ता है। उसे हर ऊंचाई और गहराई से देखना सीखना होता है। पर यह सब सिर्फ उसकी तैयारी है। उसका असली काम कुछ और है। उसका काम है मूल्य बनाना। क्रिएट वैल्यूस। कांट और हेगल जैसे मजदूर सिर्फ पुराने

मूल्यों को सजाते और साफ करते [संगीत] हैं। वे पुरानी बातों को सिर्फ समझने लायक बनाते हैं। यह भी एक बड़ा काम है। पर असली फिलॉसफर तो हुकुम देने वाले, कमांडर्स और कानून बनाने वाले लॉ गिवर्स होते हैं। वे कहते हैं ऐसा ही होना चाहिए। वे इंसानियत का क्यों और कहां तय करते हैं? वे अपनी ताकत से भविष्य को गढ़ते हैं। उनके लिए बीता हुआ समय सिर्फ एक होजार या हथौड़ा है। उनका जाना ही असल में बनाना है। उनकी सच्चाई की चाह ही असल में ताकत की चाहत है। [संगीत] विल टू पावर है। क्या आज ऐसे दार्शनिक है? क्या कभी थे? क्या एक दिन उन्हें होना नहीं चाहिए? मुझे यह साफ दिख रहा है फिलॉसफर आने वाले कल के लिए बहुत जरूरी है। इसलिए वह हमेशा अपने समय के खिलाफ होता है। उसका सबसे बड़ा दुश्मन उसके समय का आदर्श ही होता है। आइडियल ही अब तक के सभी महान लोगों ने [संगीत] जिन्हें हम दार्शनिक कहते हैं अपना मिशन इसी में पाया है। वे अपने समय का बैड कॉन्शियस [संगीत] बुरा जमीर थे। उन्होंने अपने समय की अच्छाइयों पर चाकू चलाया है। वे चाहते थे कि इंसान महानता के नए रास्ते पर चले। आज के मॉडर्न आईडिया आज सबको एक कोने में या किसी एक काम में बंद करना चाहते हैं।

The Qualities of the Philosopher

ऐसे में दार्शनिक का काम है इंसान को महान बनाना। महानता का मतलब है सब कुछ समेटने की ताकत। महान वही है जो सबसे ज्यादा जिम्मेदारी उठा सके। आजकल का समय विल को कमजोर बनाता है। इच्छा शक्ति को कमजोर बनाता है। इसलिए आज के दार्शनिक आज के फिलॉसोफर्स उनके लिए महानता का मतलब है विल की ताकत। इच्छाशक्ति की ताकत, स्ट्रेंथ ऑफ विल और सख्ती। सोक्रेटीस सुकरात के समय लोग सिर्फ मजे के पीछे भाग रहे थे। तब आत्मा की महानता के लिए मजाक जरूरी था। सोक्रेटीज ने बड़े लोगों के दिल में छेद किया। उसने साफ कह दिया मेरे सामने नाटक मत करो। हम सब बराबर

हैं। पर आज मामला अलग है। आज पूरे यूरोप में सिर्फ भेड़चाल की इज्जत होती है। आज बराबरी का मतलब है हर अनोखी और नई चीज के खिलाफ जंग। आज महानता का मतलब है ऊंचा होना। अकेला खड़ा होना। अपनी मर्जी से जीना। आज महान वही है जो सबसे ज्यादा अकेला रह सके जो सबसे ज्यादा छुप सके जो अच्छाई और बुराई के पार जा सके बिय्ड गुड एंड इविल जो अपनी खूबियों का मालिक हो क्या आज के समय में ऐसी महानता मुमकिन है फिलॉसफर क्या है यह सीखना बहुत मुश्किल है क्योंकि इसे कोई सिखा नहीं सकता। इसे सिर्फ खुद एक्सपीरियंस करना पड़ता है। खुद

अनुभव। आजकल लोग उन चीजों पर बातें करते हैं जिनका उन्हें कोई अनुभव नहीं है। दार्शनिक के बारे में आम लोगों के सारे ख्याल गलत हैं। वे सोचते हैं कि

सोचना बहुत धीमा, मुश्किल और मेहनत वाला काम है। जैसे कोई पसीने वाला बोझ हो। पर हमारे लिए सोचना नाचने जैसा मजेदार और डिवाइन काम है। कलाकार इस बात को बेहतर समझते हैं। वे जानते हैं कि जो वे नियमों की मजबूरी में काम करते हैं तभी वे सबसे ज्यादा आजाद और [संगीत] ताकतवर महसूस करते हैं। आत्माओं और समस्याओं के बीच एक ऊंचनीच होती है। ऊंचे सवाल उन लोगों को दूर भगा देते हैं जो उनके लायक नहीं है। घटिया और

मामूली दिमाग वाले इन दरवाजों को नहीं खोल सकते। चाहे वे अपना सिर फोड़ लें। यह दरवाजे उनके लिए बंद ही रहेंगे। फिलॉसफर बनने के लिए आपको पैदा होना [संगीत] पड़ता है। इसके लिए आपको तैयार किया जाना चाहिए। यहां आपका खानदान और आपका खून ही फैसला करता है। कई पीढ़ियों ने दाशनी के लिए रास्ता बनाया होता है। उसके अंदर हर खूबी को धीरे-धीरे ढाला जाता है। उसकी सोच में निडरता और तेजी होनी चाहिए। पर सबसे ज्यादा जरूरी है बड़ी जिम्मेदारियां उठाने की तैयारी। हुकुम देने वाली नजरिया और अपनी मर्जी की ताकत एक ऐसी आंख जो हर किसी की तारीफ नहीं करती

और हर किसी से प्यार नहीं करती। हमारी खूबियां शायद हमारे पास भी अपनी खूबियां हैं। पर यह हमारे दादा परदादा वाली भारी भरकम खूबियां नहीं है। हम 20 वीं सदी के नए लोग हैं। हमें सब जानने की खुजली है। हम नकाब पहनना और बदलना जानते हैं। हमारे अंदर एक छिपी हुई मीठी क्रूरता है। एक क्रुलिटी अगर हमें खूबियां चाहिए तो वे हमारे मन के हिसाब की होंगी। हम उन्हें अपने दिमाग की भूल भुलैया में ढूंढेंगे। या अपनी खूबियां ढूंढना मजेदार नहीं है। पुराने लोग इसे साफ जमीर गुड कॉन्शियस कहते थे। यह एक पुरानी पूंछ की तरह है। हमारे दादा इसे अपने सर के पीछे लटकाते

थे। हम भी इसे अब तक लटकाए हुए हैं। हम खुद को बहुत आधुनिक समझते हैं। पर इस एक मामले में हम भी पुराने ही हैं। पर याद रखो बहुत जल्द सब बदलने वाला है। जैसे आसमान में कभी-कभी एक ग्रह के दो सूरज होते हैं। अलग-अलग रंग के सूरज कभी लाल रोशनी कभी हरी कभी-कभी दोनों साथ में चमकते हैं। वैसे ही हम आज के इंसान भी अलग-अलग नैतिकता के असर में है। हमारे काम कभी एक रंग के नहीं होते। वे अक्सर मिलेजुले रंगों वाले होते हैं। हमारा व्यवहार कभी साफ और सीधा नहीं होता। दुश्मनों से प्यार करना। हमने यह अच्छी तरह सीख लिया है। आजकल

हजारों लोग ऐसा कर रहे हैं। पर एक और ऊंची बात हो रही है। हम जिससे सबसे ज्यादा प्यार करते हैं, उसका तिरस्कार करना भी सीख रहे हैं। यह सब चुपचाप और बिना शोर के हो रहा है। दिखावे वाली नैतिकता हमें पसंद नहीं है। यह एक तरक्की है। हमारे जमीर में संगीत है। हमारे कॉन्शियस में संगीत है। स्पिरिट में डांस है। हमें पुराने बोरिंग भाषण पसंद नहीं। उन लोगों से सावधान रहो जो नैतिकता में खुद को बहुत बारीक और समझदार दिखाते हैं। अगर वे

तुम्हारे सामने एक बार भी गलती कर दें तो वे तुम्हें कभी माफ नहीं करेंगे। वे अंदर ही अंदर तुम्हारी बुराई करने

लगेंगे। भले ही वे दोस्त बने रहे। भूलने वाले लोग खुशकिस्मत हैं क्योंकि वे अपनी गलतियों को भी भूलकर मजे में रहते हैं। फ्रांस के साइकोलॉजिस्ट, फ्रांस के मनोवैज्ञानिक हमेशा आम लोगों की बेवकूफी का मजा लेते हैं। पर मैं कुछ और देखने की सलाह देता हूं। देखो कैसे मामूली और शरीफ लोग महान लोगों के साथ चालाकी करते हैं। उनकी यह चालाकी बहुत बारीक और जहरीली होती है। यह किसी भी अकलमंदी से ज्यादा तेज है। मामूली और खास के बीच की इस लड़ाई को देखो। यह भगवानों के देखने लायक तमाशा है। तुम भी खुद की चीर फाड़ करो। जो लोग दिमाग से कमजोर हैं, वे नैतिकता का

इस्तेमाल बदला लेने के लिए करते हैं। वे होशियार लोगों को बुरा बताकर अपनी कमजोरी की भरपाई करते हैं। वे भगवान के सामने सब बराबर का शोर मचाते हैं। उन्हें बराबरी दिखाने के लिए भगवान की जरूरत पड़ती है। वे नास्तिकता के वे एथिज्म के सबसे बड़े दुश्मन है। वे नहीं जानते कि ऊंची रूह, लॉफ्टी स्पिरिचुअलिटी और एक शरीफ आदमी में कोई मुकाबला ही नहीं है। ऊंची स्पिरिट असल में इंसाफ और उस कड़वी सख्ती का ही रूप है जो ऊंचनीच को समझती है। आजकल बिना स्वार्थ काम करने की बड़ी तारीफ होती है। पर जो बातें ऊंची स्पिरिट्स को मजेदार लगती हैं, वह मामूली लोगों को

बिल्कुल बेकार। वे उसे बिना स्वार्थ का काम कह देते हैं। पर सच तो यह है कि प्यार या कुर्बानी में भी इंसान को कुछ ना कुछ चाहिए होता है। वह एक जगह कुछ छोड़ता है। ताकि दूसरी जगह उसे ज्यादा मिल सके। पर सच तो एक औरत की तरह है। उसके साथ जबरदस्ती मत करो। कभी-कभी मैं बिना स्वार्थ वाले आदमी की इज्जत करता हूं। पर सिर्फ इसलिए कि उसे खुद के नुकसान पर दूसरे के काम आने का हक है। सब कुछ इस पर निर्भर करता है कि वह कौन है और दूसरा कौन? जो हुकुम देने के लिए बना है उसके लिए विनम्र होना एक बर्बादी है। हर किसी के लिए एक ही नैतिकता होना गलत है। यह कहना

अनैतिक है। इमोरल है कि जो एक के लिए सही है, वही दूसरे के लिए भी है। नैतिकता को ऊंचनीच के सामने झुकना ही होगा। जहां देखो वहां दया का भाषण दिया जा रहा है। आजकल इसके अलावा और कोई धर्म नहीं बचा है। पर इस शोर के पीछे एक खुद से नफरत छिपी है। आज का नए विचारों वाला इंसान एक घमंडी बंदर की तरह है जो खुद से ही परेशान है। वह दुखी है और उसका घमंड चाहता है कि दूसरे भी उसके साथ मिलकर दुखी हो। आजकल का मिलाजुला यूरोपियन आदमी बहुत बदसूरत है। उसे सजने के लिए इतिहास एक कपड़ों की दुकान जैसा लगता है। वह एक के बाद एक पुराने कपड़े बदलता रहता है। उससे

कोई भी कपड़ा फिट नहीं बैठता। कभी वह रोमांटिक बनता है, कभी क्लासिकल तो कभी ईसाई। पर उसे कुछ भी जचता नहीं है। वह परेशान है। पर इस परेशानी में उसका इतिहास वाला दिमाग मजे लेता है। वह पुरानी चीजों को पहनता है, उतारता है और उनकी पढ़ाई करता [संगीत] है। हम इतिहास के साथ मजाक कर रहे हैं। शायद भविष्य में हमारी यह हंसी ही बची रहेगी। यह जो इतिहास की समझ है, इसे हम यूरोपियन अपनी खूब मानते हैं। यह हमें लोकतंत्र की वजह से मिली नस्लों की खिचड़ी से मिली है। हमारे अंदर पुरानी सारी संस्कृतियों का कचरा भरा है। हम आधे जंगली हैं। इसलिए हम

हर तरह की गंदगी और पुरानी चीजों में घुस जाते हैं। पहले के ऊंचे लोगों का टेस्ट बहुत [संगीत] कड़क था। उन्हें जो पसंद नहीं था, वे उसे हाथ नहीं लगाते थे। पर हमें सब चलता है। हम होमर और शेक्सपियर का मजा लेते हैं क्योंकि हमें यह जंगलीपन पसंद है। इसमें कोई सही तालमेल नहीं है। हम तो बस पागल घोड़े की तरह अनंत की तरफ भागना चाहते हैं। हम तभी सबसे ज्यादा खुश होते हैं जब हम सबसे ज्यादा खतरे में हो। तुम जो भी सोचते हो चाहे वह मजे की बात हो या दुख की वह सब बचकानी बातें हैं। कोई भी असली बनाने वाला इन पर हंसेगा।

तुम्हें समाज के दुखी लोगों पर दया आती है। पर हमें तुम पर दया आती है। तुम इंसान को छोटा कर रहे हो। तुम चाहते हो कि दुनिया से दुख मिट जाए। पर हम चाहते हैं कि दुख और बढ़े। और पहले से भी बुरा हो जाए। इंसान आज तक जितना भी बड़ा बना है, वह सिर्फ बड़े दुख की वजह से बना है। इंसान के अंदर दो चीजें साथ रहती हैं। एक वह मिट्टी है और दूसरा वह जो बनाने वाला है। इंसान के अंदर मिट्टी, कचरा और बेवकूफी भी है। पर उसके अंदर गढ़ने वाला और हथौड़े जैसी सख्ती भी है। तुम्हारी दया उस मिट्टी के लिए है जिसे पीटा और जलाया जाना चाहिए।

पर हमारी दया उस बनाने वाले के लिए है जो इस मिट्टी को गढ़कर कुछ महान बनाना चाहता है। हम तुम्हारे इस लाड प्यार के खिलाफ हैं। दुखी वह तरीका है जिससे रूह जिससे सोल मजबूत और महान बनती है। हम बुरे लोग भी अपनी जिम्मेदारियों के जाल में फंसे हैं। पर हमारी दुनिया बहुत बारीक है। यहां हुकुम और गुलामी बहुत छुपी हुई है। यह दुनिया आम लोगों की नजरों से बची हुई है। कभी-कभी हम अपनी इन बेड़ियों में भी नाचते हैं। पर अक्सर हम इस किस्मत पर दांत पीसते हैं। भीड़ और बेवकूफों को लगता है कि हम बिना जिम्मेदारी के जी रहे हैं।

उन्हें लगने दो। हम हमेशा उनके खिलाफ ही रहेंगे। ईमानदारी ही वह इकलौती खूबी है [हंसी] जिसे हम आजाद लोग नहीं छोड़ सकते। हम इसी पर मेहनत करेंगे। हम खुद को इसी में माहिर बनाएंगे। एक दिन हमारी ईमानदारी इस बूढ़ी और बोरिंग सिविलाइजेशन पर मजाक बनकर चमकेगी। अगर कभी हमारी ईमानदारी थक जाए

और हमें कोमल या नरम बनने का लालच दे तो हमें सख्त रहना होगा। हमें अपने अंदर के शैतान को बाहर निकालना होगा। हमें उस हर चीज से घिन आनी चाहिए जो साफ नहीं है। हमें मना की हुई चीजों का लालच और रोमांच पसंद है। हमारा ज्ञान पाने का लालच असल में हमारी

विल टू पावर है। हमारी ताकत की चाहत। लोग हमें गलत समझेंगे। वे कहेंगे कि हमारी ईमानदारी ही हमारी बुराई है। क्या फर्क पड़ता है? पुराने भगवान भी तो पवित्र किए हुए शैतान ही थे। हमें खुद के बारे में क्या पता। बस यह ध्यान रहे कि हमारी ईमानदारी हमारा घमंड ना बन जाए। हर खूबी अंत में बेवकूफी की तरफ ले जाती है। रूस में कहते हैं इतनी सादगी कि बंदा संत बन जाए। हमें ईमानदार बनते बनते संत और बोरी नहीं बनना है। जिंदगी बहुत छोटी है। इसे बोरियत में क्यों खराब करें? मुझे माफ करना। पर अब तक की नैतिकता बहुत बोरिंग रही है।

Nation, Morality and Hierarchy

यह सिर्फ नींद की गोली जैसा काम करती है। नैतिकता को इसके समर्थकों की बोरियत ने सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाया है। मैं तो चाहता हूं कि बहुत कम लोग इस पर सोचे। अगर यह बातें मजेदार हो गई तो प्रॉब्लम हो जाएगी। यूरोप में किसी को अंदाजा भी नहीं है कि नैतिकता पर सोचना कितना खतरनाक हो सकता है। इन अंग्रेजों को देखो। यह पुराने रास्तों पर मरे हुए बैल की तरह चलते हैं। इनमें कोई नया ख्याल नहीं है। यह सिर्फ अपने पाखंड को विज्ञान का नाम देकर छुपा रहे हैं। यह अंग्रेज चाहते हैं कि उनकी नैतिकता ही पूरी दुनिया पर राज करें। वे चाहते हैं कि सबका फायदा हो। पर असल में वे सिर्फ अपना आराम और पार्लियामेंट में सीट चाहते हैं। उन्हें लगता है कि यही अच्छाई है। यह लोग भेड़ चाल वाले जानवर हैं। वे नहीं समझते कि सबके लिए एक जैसा नियम होना ही गलत है। इंसानों के बीच ऊंचनीच होती है। जो एक के लिए सही है, वह दूसरे के लिए गलत हो सकता है। यह अंग्रेज मामूली और बिना दिमाग के लोग हैं। इनकी उपयोगिता बस इतनी है कि यह बहुत बोरिंग है। आज के लोग खुद को बहुत दयालु समझते हैं। वे अपने अंदर के जंगली जानवर से डरते हैं। पर सच तो यह है कि हमारी पूरी ऊंची सभ्यता, हायर कल्चर, क्रूरता यानी क्रुलिटी पर टिकी है। जंगली जानवर मरा नहीं है। वह बस सब सभ्य बन गया है। ट्रांसफिगर दुख भरी कहानियों में हमें मजा क्यों आता है? क्योंकि उनमें क्रूरता है। यहां तक कि भगवान और धर्म के नाम पर जो मजा लिया जाता है, उसके पीछे भी क्रूरता ही है। पुराने रूम के लोग मैदानों में खून देखते थे। आज के लोग अपनी स्पिरिट को, अपनी रूह को तड़पाते हैं। पुरानी साइकोलॉजी कहती थी कि क्रूरता दूसरों को तड़पाने में है। पर सच तो यह है कि खुद को तड़पाने में भी बहुत मजा है। साधु संत जो खुद को भूखा रखते हैं या अपनी

इच्छाओं को मारते हैं, वे अपनी क्रूरता का इस्तेमाल खुद पर ही कर रहे होते हैं। यहां तक कि जो आदमी सच की तलाश में है, जो सीकर ऑफ नॉलेज है, वह भी क्रूर है। वह अपने दिमाग को वह देखने पर मजबूर करता है जो उसे पसंद नहीं है। वह अपने ही दिल की इच्छाओं के खिलाफ जाकर ना कहता है। गहराई से कुछ भी जानना अपने ही दिमाग के साथ जबरदस्ती करना है। हर ज्ञान की छा में क्रूरता की एक बूंद छिपी होती है। शायद आत्मा की मर्जी फंडामेंटल विल ऑफ द स्पिरिट के बारे में मेरी बातें आपको बिना डिटेल्स के समझना है। मुझे थोड़ा समझाने दीजिए। जिसे लोग आत्मा कहते हैं स्पिरिट वह अंदर और बाहर दोनों जगह मालिक बनना चाहती है। वह बहुत सारी चीजों को समेटकर एक आसान सा रूप एक सिंपलीसिटी देना चाहती है। यह बिल्कुल एक पेट की तरह है। जैसे पेट खाने को पचाता है, वैसे ही आत्मा नई चीजों को पुरानी यादों के हिसाब से ढालना चाहती है। वह मुश्किल बातों को अनदेखा करती है और अपनी मर्जी से सच को बदल देती है। इसका असली मकसद सिर्फ बढ़ना है या यूं कहें कि अपनी बढ़ती हुई ताकत को महसूस करना है। यही मर्जी कभी-कभी जानबूझकर अनजान बन जाती है। वह खिड़कियां बंद कर लेती है ताकि बाहर का सच अंदर ना आए। उसे अनसर्टेनिटी, अनिश्चितता और रहस्य में मजा आता है। वह दूसरे लोगों को धोखा देने और नकाब पहनने में मजा लेती है। पर इसके उलट एक ज्ञानी इंसान के अंदर एक मैन ऑफ नॉलेज के अंदर एक दिमागी क्रूरता, एक इंटेलेक्चुअल क्रुएलिटी काम करती है। वह चीजों को उनकी गहराई में देखना चाहता है। वह बहादुर सोचने वाला इसे अपने अंदर महसूस करेगा। लोग इसे ईमानदारी कह सकते हैं। पर हम आजाद लोग हम फ्री स्पिरिट्स इसे सजावटी शब्दों में नहीं कहेंगे। हमारा काम है इंसान को वापस उसकी कुदरत उसके नेचर में ले जाना। इंसान के ऊपर जो

फालतू की इंटरप्रिटेशन और झूठे मतलब थोप दिए गए हैं उन्हें हटाना। इंसान को बाकी कुदरत की तरह ही बिना डरे देखना होगा। पुराने दार्शनिकों ने उसे बहुत बहकाया है कि तुम ऊंचे हो, तुम अलग हो। इस बेकार के जाल को इस मेटाफिजिकल बर्ड कैचर्स को तोड़ना ही हमारा असली काम है। सीखना हमें बदल देता है। जैसे खाना शरीर को बदलता है। वैसे ही ज्ञान हमें बदलता है। पर हमारी सोल हमारी रूह के एकदम नीचे एक पत्थर जैसा हिस्सा है। जिसे बदला नहीं जा सकता। यह हमारा नसीब है। हर बड़े सवाल के जवाब में हमारे अंदर से एक आवाज आती है। मैं यहीं हूं।

एक सोचने वाला इंसान मर्द और औरत के बारे में नया नहीं सीख सकता। वह सिर्फ वही जान सकता है जो उसके अंदर पहले से पक्का है। औरतें अब आजाद होना चाहती हैं। वे औरत के बारे में मर्दों को सिखा रही हैं। यह यूरोप को बदसूरत बना रहा है। औरतों के अंदर बहुत सी कमियां, ओझापन और घमंड छुपा हुआ है। अब तक वे मर्दों के डर की वजह से रुकी हुई थी। अगर औरत अपना जादू और दुख दूर करने का हुनर भूल गई तो यह बड़ी प्रॉब्लम होगी। औरत का वैज्ञानिक बनना बहुत ही घटिया टेस्ट है। औरतों का असली हुनर तो झूठ बोलना और सुंदर दिखना है। हम मर्द भी औरतों की इसी कला और उनकी मासूम बेवकूफियों से प्यार करते हैं। क्या कभी किसी औरत ने किसी दूसरी औरत के दिमाग की गहराई या इंसाफ की तारीफ की है। सच तो यह है कि औरत खुद औरतों से सबसे ज्यादा नफरत करती है। जब कोई औरत पुराने जमाने की पढ़ी लिखी औरतों जैसे मैडम डिस्टॉल का हवाला देती है

तो इसका मतलब है कि उसकी नेचुरल आदतें उसकी इंस्टिंक्ट्स खराब हो चुकी हैं। मर्दानी सोच और आजादी के खिलाफ यह औरतें ही सबसे बड़ा सबूत है। किचन में बहुत बेवकूफी भरी पड़ी है। औरतें खाना बनाना नहीं समझती। अगर औरत एक सोचने वाला जीव होती तो हजारों सालों से खाना

पकाते हुए वह शरीर के विज्ञान के बड़े सच खोज लेती। खराब खाना बनाने वाली औरतों की वजह से इंसानियत की तरक्की रुकी हुई है। आज भी हालात कुछ अच्छे नहीं है। कभी-कभी एक छोटा सा वाक्य पूरी संस्कृति का पूरे कल्चर का सच बता देता है। जैसे मैडम डी लंब ने अपने बेटे से कहा था। मेरे दोस्त सिर्फ वही बेवकूफियां करो जो तुम्हें बहुत मजा दे। यह एक मां की सबसे अकलमंद बात है। दानंती और गेटे ने औरतों के बारे में जो कहा, कोई भी स्वाभिमानी औरत उसे नहीं मानेगी। गेटे ने कहा था कि औरत हमें ऊपर खींचती है। पर सच तो यह है कि औरतें खुद यही बात मर्दों के बारे में मानती हैं। औरतों के लिए सात छोटी बातें। बोरियत तुरंत भाग जाती है। बस एक मर्द को हमारे घुटनों के पास आने दो। बुढ़ापा और किताबी ज्ञान यह दोनों कमजोर चरित्र वाली औरतों की भी मदद करते हैं। गहरे रंग के कपड़े और चुप्पी हर समझदार औरत के लिए यही सही स्टाइल है। जब मैं बहुत खुश होती हूं तो किसका शुक्रिया अदा करती हूं? भगवान का और अपने अच्छे दर्जी का। जवानी में फूलों से सजी एक गुफा, बुढ़ापे में वहां से निकलता हुआ एक खूंखार ड्रैगन। ऊंचा खानदान, सुंदर पैर और एक दमदार मर्द। काश यह सब मेरे होते।

बात छोटी पर मतलब गहरा। बेवकूफ औरत के लिए इसे समझना बहुत मुश्किल है। आज तक मर्दों ने औरतों के साथ वैसा ही बर्ताव किया है जैसे किसी भटकी हुई चिड़िया के साथ किया जाता है। वह ऊंचाई से उड़कर उनके पास आ गई है। मर्द उसे बहुत कोमल, नाजुक, जंगली और प्यारी चीज समझते हैं। परवे उसे पिंजरे में बंद करके रखना चाहते हैं। क्यों? ताकि वह उड़कर कहीं भाग ना जाए। जो लोग मर्द और औरत की समस्या को नहीं समझते वे बहुत कम अकल वाले हैं। मर्द और औरत के बीच एक जन्मजात दुश्मनी और खिंचाव होना ही चाहिए। इसे नकारना और बराबरी के हक या एक जैसी ट्रेनिंग के सपने देखना यह सब ओछी सोच की निशानी है। जो फिलॉसफर इस जगह पर आकर कमजोर पड़ जाए उस पर कभी भरोसा मत करो। वह जिंदगी के गहरे सवालों का जवाब कभी नहीं दे पाएगा। एक गहरा और मजबूत इंसान औरतों के बारे में वैसा ही सोचता है जैसा पुराने एशिया के लोग सोचते थे। वह औरत को अपनी जायदाद मानता है। वह उसे सेवा के लिए बनी एक चीज समझता है। पुराने ग्रीक्स भी यही मानते थे। जैसेजैसे उनकी संस्कृति उनके कल्चर बढ़ी वे औरतों के मामले में और भी सख्त होते गए। यही सही और कुदरती तरीका था। आज के समय में औरतों की जितनी इज्जत मिल रही है, उतने पहले कभी नहीं मिली। यह डेमोक्रेसी यह लोकतंत्र का घटिया असर है। जैसे आजकल लोग बुढ़ापे की इज्जत नहीं करते, वैसे ही वे औरतों को हद से ज्यादा छूट दे रहे हैं। नतीजा क्या है? औरतें अब बेशर्म हो रही हैं। उनका टेस्ट भी बिगड़ रहा है। वे मर्द से डरना छोड़ रही हैं। पर जो औरत मर्द से डरना छोड़ देती है, वह अपनी औरतों वाली कुदरती आदतें अपनी नेचुरल इंस्टिंक्ट्स खो देती है। आज की औरतों का सबसे बड़ा सपना क्या है? एक क्लर्क बनना। वे आजादी और तरक्की के झंडे लहरा रही हैं। पर असल में वे पीछे जा रही हैं। जब से फ्रांस की क्रांति हुई है,

[illegible]

[illegible]

Analysis of Cultural and Moral Tendencies

औरत की असली ताकत उसकी नेचर में है। वह एक शिकारी जानवर की तरह चालाक है। वह दास्ताने के नीचे छुपे बाघ के नाखून जैसी है। वह स्वार्थ में बहुत भोली और जंगली है। वह खतरनाक है और सुंदर बिल्ली की तरह है। इसी खतरे और दया की वजह से मर्द उसे प्यार करता था। पर अब यह सब खत्म हो रहा है। औरत अब बोरिंग होती जा रही है। ओ यूरोप के लोगों तेरे ऊपर एक नई बेवकूफी हावी हो रही है और यह कोई भगवान का खेल नहीं बल्कि एक मॉडर्न आईडिया है। मैंने फिर से रिचर्ड वेगनर का संगीत सुना। यह बहुत भारी और पुरानी कला है। इसे समझने के लिए संगीत का पुराना इतिहास जानना जरूरी है। जर्मन लोगों के लिए यह गर्व की बात है। इसमें हर तरह का मौसम और स्वाद मिला हुआ है। कभी यह बहुत पुराना लगता है तो कभी एकदम नया। यह मजेदार भी है और खुरदरा भी। इसमें आग है और हिम्मत भी। पर इसमें कोई खूबसूरती नहीं है। इसमें नाच या सफाई नहीं है। इसमें एक तरह का अनाड़ीपन है। यह बहुत उलझा हुआ और बिना किसी आकार का है। यह जर्मन सोल की असली पहचान है। जर्मन सोल एक साथ जवान भी है और बहुत बूढ़ी भी। यह बहुत पकी हुई है और उसका भविष्य अभी बाकी है। जर्मन लोग परसों की बात करते हैं या आने वाले कल की। उनके पास अपना कोई आज नहीं है। हम अच्छे यूरोपियन भी कभी-कभी देशभक्ति [संगीत] के पुराने नशे में डूब जाते हैं। यह एक पुरानी बीमारी की तरह है। कमजोर दिमाग वाले लोग इससे जल्दी बाहर नहीं निकल पाते। मैंने दो बूढ़े देशभक्तों को आपस में चिल्लाते हुए सुना। एक बोला यह नेता महान है क्योंकि इसने बड़ा साम्राज्य बनाया है। दूसरा चिल्लाया यह महान नहीं है। इसने लोगों को जबरदस्ती राजनीति में धकेल दिया है। इसने लोगों की

पुरानी खूबियों को मारकर उन्हें मामूली बना दिया है। इसने लोगों की सोच को छोटा कर दिया है। यह महान नहीं सिर्फ पागलपन है। वे दोनों एक दूसरे पर चिल्ला रहे थे। पर मुझे लगा कि एक देश की सोच छोटी होने से किसी और की सोच बड़ी जरूर होगी। आजकल जिसे तरक्की यानी प्रोग्रेस या लोकतंत्र यानी डेमोक्रेसी कहते हैं। वह असल में इंसानों को एक जैसा बनाने का सिस्टम है। यूरोप के लोग अब अपनी जड़ों से कट रहे हैं। वे खाना बदोश नोमेडिक बन रहे हैं। वे बहुत जल्दी माहौल में ढलना सीख रहे हैं। इस लोकतंत्र से एक जैसे मामूली लोग पैदा हो रहे हैं। यह लोग मजदूरों जैसे हैं जिन्हें अपना काम चलाने के लिए एक मालिक चाहिए। वे रोटी की तरह हुकुम देने वाले के भूखे हैं। यूरोप का यह सिस्टम गुलामों की फौज तैयार कर रहा है। पर याद रहे जहां बहुत सारे गुलाम होंगे, वहां बहुत मजबूत तानाशाह भी पैदा होंगे। लोकतंत्र असल में तानाशाहों को पालने का एक अनचाहा इंतजाम है। हमारा सूरज बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। उम्मीद है कि इस धरती के इंसान भी वैसा ही करेंगे और हम अच्छे यूरोपियन इसमें सबसे आगे होंगे। पुराने समय में जर्मन लोगों को गहरा कहा जाता था। पर अब हमें इस बात पर शक करना चाहिए। क्या जर्मन गहराई सिर्फ हाजमे की प्रॉब्लम है? बैड डाइजेशन। जर्मन सोल बहुत उलझी हुई है। इसमें एक या दो नहीं बल्कि बहुत सारी आत्माएं रहती हैं। जर्मन सोल को समझना नामुमकिन है। यह डरावनी भी हो सकती है। जर्मन लोग हमेशा पूछते रहते हैं। जर्मन होना क्या है? वे बादलों और धुंध से प्यार करते हैं। जो चीज साफ नहीं है, जो अभी बन रही है, उसे वे गहरा कहते हैं। जर्मन इंसान अभी बन रहा है, वह पूरी तरह तैयार नहीं है। उनकी ईमानदारी भी एक खतरनाक नकाब है। वे खुद को सीधा साधा और बेवकूफ दिखाते हैं ताकि दूसरे देश उन्हें मामूली समझे। पर यह उनकी चालाकी है। वे अपनी गहराई का नाटक करके दुनिया को धोखा दे रहे हैं। पुराना अच्छा समय बीत चुका [संगीत] है। वह मुजाट के गानों के साथ खत्म हो गया। हम खुशकिस्मत हैं कि मुजाड़ का अंदाज आज भी हमें समझ आता है। उसकी कोमलता, उसका बचपना और उसकी तमीज आज भी हमारे दिल को छूती है। पर यह सब जल्द ही खत्म हो जाएगा। बिथोविन का दौर तो और भी जल्दी खत्म होगा। वह मुजाार्ड की तरह किसी पुरानी महान परंपरा का अंत नहीं था। वह तो बस एक बदलाव था। विथवन एक पुरानी टूटती हुई सोल और एक नई आने वाली सोल के बीच का पुल है। उसके म्यूजिक में पुरानी हार और नई उम्मीदों की मिलीजुली रोशनी है। यह वही रोशनी है जिसमें पूरा यूरोप तब डूबा था जब वह आजादी और नेपोलियन के सपने देख रहा था। इसके बाद जो भी जर्मन म्यूजिक आया वह सब रोमांटिक था। वह बहुत छोटा और सतही था। वेबर और वेगनर का म्यूजिक अब पुराना पड़ चुका है। यह म्यूजिक महान नहीं था। यह सिर्फ भीड़ के लिए और थिएटर के लिए था। मेंडलसोन एक छोटा सा खूबसूरत हिस्सा था जिसे लोग जल्दी भूल गए। रही बात सुमान की तो वह सिर्फ एक जर्मन घटना थी। वह बिथोवन या मोजाट की तरह यूरोपियन नहीं बन पाया। सुमान अपनी सोल में छुपकर रहने वाला एक कमजोर इंसान था। उसके म्यूजिक में बस छोटी भावनाओं का नशा था। उसके साथ जर्मन म्यूजिक का सबसे बड़ा खतरा शुरू हुआ। यूरोप की रूह सोल ऑफ यूरोप की आवाज खो देना और सिर्फ एक देश तक सिमट जाना।

जर्मन भाषा में लिखी किताबें पढ़ना किसी टॉर्चर से कम नहीं है। जर्मन लोग जिसे किताब कहते हैं, वह बिना सुर और बिना लय का एक दलदल है। जर्मन लोग

पढ़ते भी बहुत बुरा है। वे आलसी है। कितने जर्मन जानते हैं कि हर अच्छे वाक्य में एक कला होती है। अगर आप वाक्य की रफ्तार नहीं समझ पाए तो आप वाक्य का मतलब भी नहीं समझ पाएंगे। आपको आवाजों के उतार-चढ़ाव को महसूस करना चाहिए। पर जर्मन लोगों के पास इसके लिए कान ही नहीं है। वे बेहतरीन स्टाइल को अनसुना कर देते हैं। एक लेखक ऐसा है जिसकी बातें ठंडी और धीमी है। जैसे किसी गुफा की छत से

टपकती बूंदे। दूसरा ऐसा है जो अपनी भाषा को एक लचीली तलवार की तरह चलाता है जो काटने और फुफकारने के लिए बेताब है। पर सुनने वाला तो बहरा है। जर्मन स्टाइल का कान से कोई लेना देना नहीं है। यहां तक कि हमारे अच्छे म्यूजिशियन भी बहुत बुरा लिखते हैं। जर्मन आदमी बोलकर नहीं पढ़ता। वह सिर्फ अपनी आंखों से पढ़ता है। उसने अपने कान दराज में बंद कर दिए हैं। पुराने जमाने में जब कोई पढ़ता था, तो वह जोर से बोलकर पढ़ता था। लोग चुपचाप पढ़ने वाले को अजीब समझते थे। जोर से पढ़ने का मतलब था, आवाज के सारे रंग और रफ्तार का मजा लेना। लिखने के

नियम भी बोलने के नियमों जैसे थे। यह सब आपके फेफड़ों की ताकत पर निर्भर करता था। पुराने जमाने के लंबे वाक्यों का मजा वही ले सकता था जिसके फेफड़े मजबूत हो। हम आधुनिक लोग हम मॉडर्न मैन तो हर मायने में छोटी सांस वाले लोग हैं। हमें बड़े वाक्यों पर कोई हक नहीं है। जर्मनी में सिर्फ एक ही जगह ढंग से बोला जाता था चर्च के मंच पर। सिर्फ पादरी ही जानता था कि शब्दों का वजन क्या होता है। इसीलिए जर्मन भाषा की सबसे बेहतरीन किताब बाइबल है। बाकी सब तो बस साहित्य है, लिटरेचर है जिसकी जड़े जर्मनी के दिल में नहीं है।

जीनियस दो तरह के होते हैं। एक वह जो बीज देता है और शुरुआत करता है। दूसरा वह जो उस बीज को पालकर नया रूप देता है। देशों के मामले में भी ऐसा ही है। ग्रीक्स और फ्रेंच लोग मां की तरह है। जो चीजों को पालते और पूरा करते हैं। यह उनका काम है। दूसरी तरफ यहूदी, रोमन और जर्मन यह लोग पिता की तरह हैं। यह नई जिंदगी की शुरुआत करने वाले लोग हैं। [संगीत] यह बेचैन रहते हैं और दूसरी जातियों, दूसरी रेसेस की तलाश में रहते हैं। यह दोनों तरह के जीनियस एक दूसरे को मर्द और औरत की तरह ढूंढते हैं। पर एक दूसरे को कभी समझ नहीं

पाते। हर देश का अपना एक पाखंड होता है। लोग अपनी उसी चालाकी या बुराई को अपनी खूबी कहते हैं। सच तो यह है कि इंसान अपने अंदर की सबसे अच्छी बात को कभी जान ही नहीं पाता। यूरोप यहूदियों का बहुत कर्जदार है। उन्होंने हमें बहुत कुछ दिया है। अच्छा भी और बुरा भी। पर सबसे बड़ी चीज जो उन्होंने दी वह है नैतिकता का महान स्टाइल। उन्होंने हमें सिखाया कि ऊंचे और बड़े दावे क्या होते हैं। उन्होंने जिंदगी को रहस्यमई और मजेदार बनाया। आज हमारे यूरोप की संस्कृति का जो आसमान चमक रहा है, वह उन्हीं की वजह से है। हम कलाकार और दार्शनिक इसके लिए यहूदियों के

शुक्रगुजार हैं। ग्रेटफुल हैं। जब कोई देशभक्ति के बुखार और राजनीति के लालच में पागल होता है तो उसके दिमाग पर बेवकूफी के बादल छा जाते हैं। आजकल के जर्मन लोगों को ही देख लो। उनके अंदर कभी फ्रांस से नफरत, कभी यहूदियों से नफरत तो कभी पोलैंड के खिलाफ नफरत जागती है। यह सब जर्मन दिमाग की छोटी बीमारियां हैं। जहां तक यहूदियों की बात है, मैंने आज तक ऐसा कोई जर्मन नहीं देखा जो उनके बारे में अच्छी बात करें। समझदार लोग भले ही इस नफरत का दिखावा ना करें पर वे भी उनके खिलाफ है। सच तो यह है कि जर्मनी में अब और यहूदियों को बचाने की

ताकत नहीं बची है। इटली, फ्रांस और इंग्लैंड के पास मजबूत हाजमा था। इसलिए उन्होंने उन्हें संभाल लिया। अब जर्मन लोग कह रहे हैं दरवाजे बंद कर दो। पूर्व से और यहूदियों को मत आने दो। लेकिन यह सच है कि यहूदी आज यूरोप की सबसे मजबूत, पक्की और शुद्ध नस्ल है। पिरेस्ट रेस है। वे सबसे बुरे हाल में भी जीतना जानते हैं। उनके पास एक मजबूत भरोसा है। वे रूस के साम्राज्य की तरह धीरे-धीरे जीतते हैं। जो भी दार्शनिक, जो भी फिलॉसफर यूरोप के भविष्य की बात करेगा। उसे यहूदियों और रूसियों को ध्यान में रखना ही होगा। यही ताकतों के इस खेल के सबसे जरूरी

खिलाड़ी हैं। कुछ सच्चाइयां ऐसी होती हैं जिन्हें सिर्फ मामूली दिमाग ही समझ सकते हैं। डार्विन, मिल और स्पेंसर जैसे अंग्रेज आजकल यूरोप में हावी हो रहे हैं। यह लोग सिर्फ छोटे-छोटे तथ्यों को इकट्ठा करना जानते हैं। पर जो असली बनाने वाला है, जो नया मूल्य पैदा करता है, उसका दिमाग इन मामूली लोगों से अलग होता है। डार्विन जैसी खोजों के लिए एक तरह का नैरोनेस और एरिडिटी चाहिए। संकुचित और सूखा दिमाग जो अंग्रेजों के पास कूट-कूट कर भरा है। जिसे आज आधुनिक विचार मॉडर्न आइडियाज कहा जाता है। वह सब इंग्लैंड की ही उपज है। जर्मन दिमाग को इन विचारों से

Master and Slave Morality

घिन आती है। फ्रांसीसी लोग तो बस इन अंग्रेजी विचारों की नकल करने वाले बंदर बन गए हैं। वे इन विचारों के सबसे पहले शिकार बने। फ्रांस ने यूरोप को महान भावनाएं, टेस्ट और तमीज दी थी। लेकिन इंग्लैंड ने यूरोप को घटियापन और मामूली सोच दी है। फ्रांस अभी में यूरोप के सबसे बारीक कल्चर का गढ़ है। यह टेस्ट का हाई स्कूल है। पर इस असली फ्रांस को ढूंढना पड़ता है। वहां के समझदार लोग खुद को छुपा कर रखते हैं। वे लोकतंत्र के शोर और मामूली लोगों की बेवकूफी से अपने कान बंद रखते हैं। विक्टर ह्यूगो के जनाजे पर जो हुआ वह बहुत घटिया

टेस्ट की नुमाइश थी। आज के फ्रांस में जर्मन सोच हावी हो रही है। वहां शोपिन हावर और हेगल की चर्चा है। फिर भी फ्रांस के पास तीन ऐसी चीजें हैं जिस पर वह गर्व कर सकता है। पहला फ्रांस में कला के लिए एक खास दीवानगी है। वहां रूप वहां फॉर्म की इज्जत है। वे साहित्य को बहुत सफाई और बारीकी से पेश करते हैं। दूसरा फ्रांसीसी लोग में इंसान के मन को पढ़ने की गजब ताकत है। वे मन की परतों को समझते हैं। जर्मन लोग इस मामले में बहुत भोले हैं। हेनरी बेल इसका सबसे बड़ा उदाहरण थे। वह फ्रांस का आखिरी महान मनोवैज्ञानिक था।

तीसरा फ्रांस के खून में उत्तर की ठंडक और दक्षिण की गर्मी का मेल है।
इसलिए वे ऐसी बातें समझ सकते हैं जो एक अंग्रेज कभी नहीं समझ पाएगा। वे

अच्छे यूरोपियन को समझते हैं। संगीतकार बीजे ने इसी दक्षिण की खूबसूरती को संगीत में दिखाया है। जर्मन म्यूजिक से सावधान रहने की जरूरत है। जो मेरी तरह दक्षिण की धूप और सफाई को प्यार करता है उसे जर्मन म्यूजिक बीमार कर सकता है। संगीत को उत्तर की धुंध से आजाद होना होगा। भविष्य का संगीत और भी गहरा और मजबूत होगा। वह अच्छे और बुरे के पार बियों्ड गुड एंड इविल होगा। वह इतना बड़ा और गहरा

होगा कि वह रेगिस्तान के डूबते सूरज और जंगली शिकारियों के बीच भी अपना घर बना सके। वह संगीत डूबती हुई नैतिकता को भी पनाह देने के लिए तैयार रहेगा। राष्ट्रवाद का पागलपन एक बीमारी है। छोटे दिमाग वाले नेता इस पागलपन की मदद से राज कर रहे हैं। वे नहीं जानते कि उनकी यह राजनीति सिर्फ कुछ समय का नाटक है। सच तो यह है कि यूरोप एक होना चाहता है। इस सदी के सभी महान लोगों ने यही कोशिश की है। वे आने वाले यूरोपियन इंसान का रास्ता तैयार कर रहे हैं। नेपोलियन, गेटे, बिथोन, स्टिंडाल, हाईन और शोपेनवर यह सब अच्छे यूरोपियन थे। वे सिर्फ

देशभक्त नहीं थे। रिचर्ड वागनर भी उन्हीं में से एक था। उसका संगीत यूरोप की तड़प को दिखाता है। वगनर का सिगफ्रिड एक बहुत आजाद इंसान था। वह बहुत सख्त, खुश और सेहतमंद था। वह पुराने सड़े हुए कायदों के खिलाफ था। पर बुढ़ापे में वार्गनर ने गलती की। उसने अपना रास्ता बदल लिया। वह धर्म और पुराने सड़े हुए विचारों की तरफ झुक गया। उसने रूम की श्रद्धा का प्रचार शुरू कर दिया। क्या यह सब दिखावा नहीं है? क्या यह पादरियों जैसा आचरण हमें शोभा देता है? याद रखो जो तुम सुन रहे हो वह रोम है। सिर्फ रोम। इंसान आज तक जितना भी ऊपर उठा है वह सिर्फ

एक ऊंची जाति वाले समाज एक अरिस्टोक्रेटिक सोसाइटी की वजह से हुआ है। आगे भी ऐसा ही होगा। यह एक ऐसा समाज है जो लोगों के बीच ऊंचनीच और उनकी वैल्यू के फर्क को मानता है। ऐसे समाज को किसी ना किसी रूप में गुलामी चाहिए ही होती है। जब समाज में अलग-अलग दर्जे होते हैं तब ऊंची जाति वाले लोग नीचे वाली को अलग नजरिए से देखते हैं। इसी से दूरी का एहसास पैदा होता है। यही एहसास इंसान की आत्मा को और ऊंचा अनोखा और ताकतवर बनाने की इच्छा जगाता है। इसी को हम इंसान का खुद से आगे बढ़ना कहते हैं। हमें इस बात पर कोई झूठी हमदर्दी नहीं

पालनी चाहिए। ऊंची जाति वाले समाज की शुरुआत की सच्चाई बहुत कड़वी है। हमें बिना किसी पक्षपात के यह मानना होगा कि ऊंची सभ्यताएं कैसे शुरू हुई। शिकारी दरिंदों जैसे लोगों ने जिनमें ताकत की जबरदस्त चाह थी। विल टू पावर थी। कमजोर और शांतिप्रिय लोगों पर हमला किया। शुरू में यह नेक लोग असल में खूंखार जंगली ही थे। उनकी ताकत सिर्फ शरीर में नहीं बल्कि उनकी मजबूत दिमागी ताकत में थी। वे पूरे इंसान थे। जिसका मतलब पूरे दरिंदे भी है। सड़न

तब होती है जब इंसान की कुदरती आदतों, [संगीत] नेचुरल इंस्टिंक्ट्स में सिस्टम बिगड़

जाता है। जैसे फ्रांस की क्रांति के वक्त वहां के ऊंची जाति वालों ने नफरत में आकर अपने [संगीत] हक छोड़ दिए। उन्होंने अपनी नैतिकता के चक्कर में खुद को कुर्बान कर दिया। यह उनकी कमजोरी और सड़न का आखिरी हिस्सा था। एक मजबूत और सेहतमंद ऊंची जाति खुद को किसी राजा या समाज का नौकर नहीं समझती बल्कि वह मानती है कि पूरा समाज सिर्फ उन्हीं के लिए बना है। उन्हें लाखों लोगों की कुर्बानी लेने में कोई झिझक नहीं होनी चाहिए। यह लोग उनके लिए सिर्फ औजार या गुलाम की तरह है। उनका असली यकीन यह होना चाहिए कि समाज उनके लिए एक सीढ़ी की तरह है। इस सीढ़ी पर

चढ़कर वे अपनी ऊंची जिंदगी तक पहुंच सके। यह बिल्कुल जावा के उन बेलों जैसा है जो शाह बलूत के पेड़ से लिपटकर बहुत ऊपर तक चली जाती हैं और सूरज की रोशनी में अपनी खुशी जाहिर करती हैं। एक दूसरे को चोट ना पहुंचाना, हिंसा ना करना और लूट खसोट ना करना यह दो बराबर के लोगों के बीच व्यवहार के लिए ठीक हो सकता है। लेकिन अगर इससे पूरे समाज का बुनियादी नियम बना दिया जाए तो यह जिंदगी को नकारना होगा। डिनायल [संगीत] ऑफ लाइफ। यह समाज को खत्म करने और सड़ाने वाला विचार है। हमें भावनाओं की कमजोरी छोड़कर गहराई से सोचना होगा। जिंदगी का असली मतलब ही कब्जा

करना, चोट पहुंचाना, कमजोर को जीतना और अपनी बात मनवाना है। हम इन शब्दों को बुरा क्यों मानते हैं? कोई भी सेहतमंद समाज जो जिंदा रहना चाहता है, वह दूसरे समाजों के साथ वही करेगा जो उसके सदस्य आपस में नहीं करते। वह ताकत की चाह विल टू पावर का जीता जागता रूप होगा। वह बढ़ना चाहेगा और दूसरों पर हावी होना चाहेगा। यूरोप के लोग इस सच को मानना नहीं चाहते। वे ऐसी दुनिया के सपने देखते हैं जहां कोई किसी का फायदा ना उठाए। यह ऐसा ही है जैसे कोई बिना अंगों के जिंदा रहने का सपना देखे। दूसरों का फायदा उठाना किसी बीमार समाज की

निशानी नहीं है। यह जिंदा रहने की एक कुदरती क्रिया है। प्राइमरी ऑर्गेनिक फंक्शन है। यह ताकत की चाह का नतीजा है। आइए हम खुद के साथ ईमानदार रहे, ऑनेस्ट रहे। दुनिया की कई नैतिकताओं को देखने के बाद मुझे दो बुनियादी टाइप मिले हैं। एक है मालिक वाली सोच और दूसरी है गुलाम वाली सोच। बड़ी और मिलीजुली सभ्यताओं में यह दोनों सोच आपस में उलझी हुई भी मिल सकती हैं। मालिक वाली सोच यानी मास्टर मोरालिटी। यह सोच उन लोगों से आती है जो राज करते हैं। वे अपनी ऊंची और गर्व भरी आदतों को ही गुड मानते हैं। भला मानते हैं, अच्छा मानते हैं। वे उन लोगों से नफरत करते हैं जो डरपोक कमजोर, लालची या इनसिग्निफिकेंट यानी तुच्छ होते हैं। उनके लिए भला होने का मतलब ऊंचा होना है और बुरा होने का मतलब घटिया होना है। वे खुद अपनी वैल्यूस तय करते

हैं। वे अपनी ताकत और खुशी को दूसरों पर लुटाना चाहते हैं। वे कठोरता और अनुशासन सेिरिटी और हार्डनेस की इज्जत करते हैं। वे हमदर्दी को कमजोरी मानते हैं। गुलाम वाली सोच स्लेव मोरालिटी यह सोच उन लोगों की है जिन्हें दबाया गया है जो दुखी हैं और अपनी आजादी के लिए तरस रहे हैं। वे ताकतवर लोगों की अच्छाइयों को शक की नजर से देखते हैं। उनके लिए गुड वही है जो उनका दुख कम कर सके। जैसे हमदर्दी, मदद करने वाला हाथ, धैर्य और विनम्रता, पेशेंस और ह्यूमिलिटी। यह नैतिकता सिर्फ फायदे पर टिकी है। यहां बुरा, इविल उसे माना जाता है जो ताकतवर और खतरनाक हो। गुलाम वाली सोच में भला आदमी उसे [संगीत] समझा जाता है जो बेवकूफ और सीधा हो। मालिक वाली सोच में इज्जत और भक्ति, रेवरेंस और डिवोशन जरूरी है। जबकि गुलाम वाली सोच में आजादी की चाह, डिजायर फॉर फ्रीडम और खुशी मेन है। दिखावा एक ऐसी चीज है जिसे समझना एक नेक आदमी के लिए बहुत मुश्किल [संगीत] है। वह इसे मानने से ही इंकार कर देगा। उसके लिए यह समझना एक बड़ी प्रॉब्लम है कि कोई इंसान दूसरों की नजरों में अपनी अच्छी इमेज क्यों बनाना चाहता है। जबकि वह खुद जानता है कि वह वैसा नहीं है। नेक आदमी को यह बात बहुत घटिया और बेवकूफी भरी लगती है। उसे लगता है कि दिखावा करने वाला खुद की इज्जत नहीं करता। वह दिखावे को एक एक्सेप्शन की तरह देखता है। वह कह सकता है शायद मुझे अपनी वैल्यू समझने में गलती हुई हो। लेकिन मैं चाहता हूं कि लोग मुझे वैसा ही जाने जैसा मैं खुद को मानता हूं। लेकिन वह इसे दिखावा नहीं बल्कि गर्व या कभी-कभी सादगी कहेगा। इतिहास गवाह है कि आम आदमी हमेशा वही बनता रहा है जैसे उसका मास्टर उसका मालिक उसे समझता था। आम आदमी खुद अपनी वैल्यूस तय नहीं कर पाता। वह आज भी दूसरों की राय का इंतजार करता है [संगीत] और उसे सच मान लेता है। चाहे वह राय अच्छी हो या बुरी। दिखावा असल में एक पुरानी पिछड़ी आदत है। यह दिखावा करने वाले के खून में छुपी गुलामी की निशानी है। यह गुलामों वाली चालाकी है जो दूसरों को बहलाकर अपनी तारीफ करवाना चाहती है। और तारीफ मिलते ही वह खुद उसके सामने झुक जाता है। कोई भी नस्ल तभी मजबूत बनती है जब वह लंबे समय तक बहुत खराब हालत से लड़ती है। इसके उलट जब किसी को बहुत ज्यादा सुविधा और सुरक्षा मिलती है तो वह बिगड़ने लगता है। उसमें अजीब सी बुराइयां पैदा होने लगती हैं। ग्रीस या वेनिस जैसे पुराने समाज इंसान को तैयार करने वाली मशीन की तरह थे। वहां लोग अपनी नस्ल को मजबूत बनाना चाहते थे। क्योंकि उनके पास कोई और रास्ता नहीं था। अगर वे मजबूत नहीं बनते तो खत्म हो जाते। उन्हें मजबूत, कठोर और सीधा होना ही पड़ा। उन्होंने अपनी इसी मजबूती को खूबी कहा। उनकी नैतिकता बहुत सख्त थी। लेकिन फिर एक ऐसा समय आता है जब सब कुछ आसान हो जाता

है। दुश्मन खत्म हो जाते हैं और सुख सुविधाएं बढ़ जाती हैं। तब पुराने अनुशासन तब पुराने डिसिप्लिन की रस्सी टूट जाती है। अब अनुशासन जरूरी नहीं बल्कि एक शौक एक लग्जरी बन जाता है। यहां से समाज में सड़न शुरू होती है। लोग अपनी मर्जी से जीने लगते हैं और पुराने नियमों को तोड़ते हैं। इस मोड़ पर समाज में अजीब सी हलचल होती है। एक तरफ नए और ऊंचे विचार पैदा होते हैं तो दूसरी तरफ भयानक स्वार्थ [संगीत] इगोइज्म की वजह से समाज खुद को खत्म करने लगता है। पुरानी नैतिकता अब पुरानी हो जाती है। अब कोई कॉमन फार्मूला नहीं बचता।

Greatness and Humility

इस दौर के दार्शनिक क्या सिखाएंगे? वे देखेंगे कि सब कुछ सड़ रहा है। वे कहेंगे कि भविष्य में सिर्फ औसत दर्जे के लोग ही बचेंगे। औसत बनो यही एकमात्र नैतिकता रह जाएगी। लेकिन यह बात कहना बहुत मुश्किल है। इसलिए वे इसे भाईचारे और ड्यूटी जैसे सुंदर शब्दों के पीछे छिपाकर कहेंगे। ऊंचनीच की समझ होना ही एक ऊंचे दर्जे की निशानी है। इज्जत देने के तरीके से पता चलता है कि किसी का खानदान या आदतें कैसी हैं। किसी इंसान की आत्मा कितनी महान है। इसकी असली परीक्षा तब होती है जब उसके सामने कोई बहुत ऊंची चीज आए। एक ऐसी चीज जिसे

अभी तक दुनिया ने पहचाना ना हो। जिसकी इज्जत करने का कोई कानूनी दबाव ना हो। घटिया लोग किसी भी पवित्र चीज या कीमती किताब को गंदे हाथों से छूने की कोशिश करते हैं। जैसे ही वे किसी महान चीज को देखते हैं, उनकी गंदगी बाहर आ जाती है। इसके उलट एक महान आत्मा चुप हो जाती है और सम्मान में अपनी नजरें झुका लेती है। यूरोप ने बाइबल की इज्जत करना ईसाई धर्म के डिसिप्लिन से सीखा। आम लोगों को यह सिखाना बहुत जरूरी है कि वे हर चीज को ना छुए। कुछ होली एक्सपीरियंसेस, कुछ पवित्र अनुभव ऐसे होते हैं जिनके सामने जूते उतार कर दूर खड़ा होना चाहिए।

आज के सो कॉल्ड पढ़े लिखे लोग बहुत बेशर्म है। वे अपनी आधुनिक सोच, अपनी मॉडर्न आइडियाज के चक्कर में हर [संगीत] चीज को छूने और चखने की कोशिश करते

हैं। उनमें तमीज की भारी कमी है। अखबार पढ़ने वाले इन नकली विद्वानों से कहीं ज्यादा तमीज और इज्जत तो उन किसानों में होती है जिन्हें समाज नीचा समझता है। इंसान के पुरखों ने, इंसान के एनसेेस्टर्स ने जो काम सालों तक किए [संगीत] हैं, उन्हें मिटाया नहीं जा सकता। चाहे वे डिस्क पर बैठकर हिसाब किताब रखने वाले कंजूस रहे हो या सुबह से रात तक हुकुम चलाने वाले सख्त लोग या फिर ऐसे लोग जिन्होंने अपने धर्म के लिए सब कुछ कुर्बान कर दिया हो। यह नामुमकिन है कि एक बच्चे में उसके मां-बाप और पुरखों के गुण ना आए। यह नस्ल की प्रॉब्लम है। प्रॉब्लम ऑफ रेस। अगर आप मां-बाप को जानते हैं तो बच्चे का अंदाजा लगा सकते हैं। अगर खून में घटियापन, जलन या फालतू का दिखावा है तो वह बच्चे में भी आएगा ही। आज की पढ़ाई और कल्चर सिर्फ इस सच को छिपाने का एक तरीका है। आज के लोकतंत्र के दौर में शिक्षा का मतलब है धोखेबाजी। यह शरीर और आत्मा में छिपे घटियापन को छिपाने की कला है। जो टीचर अपने स्टूडेंट से कहता है सच्चे बनो वह एक नंबर का गधा है। आप नेचर को बाहर नहीं निकाल सकते। वह घटियापन लौट कर वापस आएगा ही। मासूम कानों को बुरा लग सकता है। पर सच यही है। स्वार्थ इगोइज़्म एक बड़ी आत्मा की असली पहचान है। ऐसी आत्मा यह मानती है कि हम जैसों के लिए दूसरों को झुकना ही होगा और खुद की कुर्बानी देनी होगी। वह इस स्वार्थ इस इगोइज्म को बिना किसी शक के स्वीकार करती है। वह इसे कठोरता नहीं बल्कि असली न्याय असली जस्टिस मानती है। जब वह अपने जैसे ही किसी दूसरे ताकतवर से मिलती है तो वह उसे इज्जत देती है। वह अपने बराबर वालों के साथ वैसे ही तमीज से रहती है। जैसे सितारों का अपना एक सिस्टम होता है। वह दूसरों को इज्जत देकर असल में खुद की ही इज्जत कर रही होती है। वह जितना लेती है, उतना ही देती है। उसे किसी का एहसान लेना पसंद नहीं। वह ऊपर नहीं देखती। वह या तो सामने देखती है या नीचे। क्योंकि वह जानती है कि वह ऊंचाई पर खड़ी है। गोथ ने कहा आप सिर्फ उसी की इज्जत कर सकते हैं जो हर वक्त सिर्फ अपने फायदे के बारे में नहीं सोचता। चीन में एक कहावत है सियाओ सिन यानी अपने दिल को छोटा बनाओ। आज की सभ्यताओं का यही हाल है। अगर कोई पुरानी ग्रीक हमें आज देखे तो उसे हमारे इस छोटेपन से घिनाएगी। हम यूरोप वाले आज उसे बहुत घटिया लगेंगे। घटियापन क्या है? शब्द सिर्फ इशारे हैं। हम एक दूसरे को तभी समझ पाते हैं जब हमारे अनुभव जब हमारे एक्सपीरियंसेस एक जैसे हो। एक देश के लोग एक दूसरे को जल्दी समझ लेते हैं क्योंकि वे एक जैसे हालात [संगीत] में रहते हैं। भाषा असल में छोटे रास्तों का इतिहास है। खतरा जितना बड़ा होता है, लोग उतनी ही जल्दी एक दूसरे की बात समझना चाहते हैं। दोस्ती और प्यार में भी। अगर दोनों की फीलिंग्स अलग है तो रिश्ता टूट जाता है। जिसकी आत्मा में जो भावना सबसे तेज होती है, वही उसके जीवन की वैल्यू तय करती है। इतिहास में वही लोग सफल हुए हैं जो औसत जो एवरेज और आम है जिनकी जरूरतें एक जैसी हैं। जो लोग अनोखे और रिफाइंड होते हैं, वे अकेले रह जाते हैं और अक्सर खत्म हो जाते हैं। इंसान का एक जैसा बनते जाना नेचर का एक बहुत ही घटिया प्रोग्रेस है। एक मनोवैज्ञानिक जो आत्माओं को पढ़ता है, वह हमदर्दी की वजह से दम तोड़ [संगीत] सकता है। उसे खुशमजाज और सख्त होना ही पड़ेगा। क्योंकि सच यह है कि बड़े लोगों और अनोखी आत्माओं का बर्बाद होना ही दुनिया का नियम है। इतिहास में हर जगह बहुत देर हो गई ही सुनाई देता है। मनोवैज्ञानिक अक्सर आम और सीधे लोगों के पास भागता है ताकि वह उन सच्चाइयों को भूल सके जो उसने देख ली है। वह दूसरों की तारीफों के पीछे अपना सच छिपा लेता है। जब दुनिया किसी

महान आदमी की पूजा कर रही होती है तो मनोवैज्ञानिक देख रहा होता है कि वह भगवान असल में एक बेचारा बलि का बकरा है। सफलता सबसे बड़ी झूठ है। महान कवि जैसे बयरन या पो असल में टूटे हुए लोग थे। वे मिट्टी में लथपथ थे, लेकिन आदर्शवादी होने का नाटक करते थे। वे अपनी गंध छुपाने के लिए अपनी रचनाओं का इस्तेमाल करते थे। औरतें हमदर्दी के चक्कर में उन्हें बचाने निकलती हैं। उन्हें लगता है कि प्यार सब कुछ ठीक कर सकता है। यह उनका अंधविश्वास है। सच तो यह है कि गहरा प्यार बचाने से ज्यादा तबाह करता है। ईसा मसीह का किस्सा भी यही है। एक ऐसा दिल जो प्यार का भूखा था और जिसने उन लोगों के लिए नरक बना दिया जो उसे प्यार नहीं करते थे। आखिर में उसने एक ऐसा भगवान बनाया जो सिर्फ प्यार है। क्योंकि उसे इंसानी प्यार [संगीत] की कमजोरियों का पता चल गया था। जिसे प्यार का ऐसा कड़वा सच पता चल जाए। वह मौत ही मांगता है। जो आदमी बहुत ज्यादा दुखी रहा है, उसकी अपनी एक अकड़ होती है। उसे पक्का यकीन होता है कि वह अपने दुख की वजह से वह उन दुनियाओं को जानता है जिनके बारे में तुम कुछ नहीं जानते। यह उसकी शान है। वह अपनी इस जानकारी को छिपाने के लिए तरह-तरह के मुखौटे पहनता है। वह हमदर्दी दिखाने वाले हाथों से नफरत करता है। वह कभी मजाक करने वाला मस्त आदमी होने का नाटक करता है। तो कभी साइंटिस्ट होने का। वह चाहता है कि लोग उसे गलत समझे। कभी-कभी वह पागलपन का नाटक भी करता [संगीत] है ताकि अपना टूटा हुआ दिल छिपा सके। हमें ऐसे आदमी के मुखौटे की इज्जत करनी चाहिए। हर जगह अपनी साइकोलॉजी और जिज्ञासा नहीं घुसेड़नी चाहिए।

दो आदमियों को सबसे ज्यादा जो चीज अलग करती है वह है उनकी सफाई की सोच, परिटी की सोच। सब दिखावा है। असल बात तो यह है कि वे एक दूसरे की बू बर्दाश्त नहीं कर सकते। जो आदमी बहुत ज्यादा साफ बहुत ज्यादा प्योर रहना चाहता है, वह सबसे अलग थलग पड़ जाता है। वह एक संत की तरह अकेला हो जाता है। उसकी आत्मा हमेशा रात से सुबह की ओर और अंधेरे से रोशनी की ओर भागती है। यह एक ऊंची आदत है। लेकिन यही उसे दूसरों से काट देती है। एक संत के लिए आम इंसानों की हमदर्दी भी गंदगी की तरह है। एक समय आता है जब उसे हमदर्दी से भी घिनाने लगती है।

ऊंचे आदमी की पहचान यह है कि वह अपनी जिम्मेदारियों को सबके साथ नहीं बांटता। वह अपने खास हकों का इस्तेमाल करना ही अपनी सबसे बड़ी ड्यूटी मानता है। जो आदमी कुछ बड़ा करना चाहता है, उसके लिए रास्ते में मिलने वाला हर आदमी या तो एक सीढ़ी है या रुकावट। वह सिर्फ तब दयालु हो सकता है जब वह ऊंचाई पर पहुंच जाए और सब पर राज करे। उसे अकेलापन और उसका जहर अच्छी तरह पता है। ऊंचे आदमियों को अक्सर सही मौके का इंतजार रहता है। लेकिन अक्सर ऐसा नहीं होता। दुनिया के हर कोने में ऐसे लोग बैठे हैं जो इंतजार कर रहे हैं। पर उन्हें नहीं पता

कि उनका इंतजार बेकार है। कभी-कभी जब मौका आता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। उनकी जवानी और ताकत खत्म हो चुकी होती है। वे खड़े होने की कोशिश

करते हैं पर उनके पैर सुन्न हो चुके होते हैं। जीनियस की कमी नहीं है। कमी है उन हाथों की जो सही वक्त पर मौके को पकड़ सके। जो आदमी दूसरे की ऊंचाई नहीं देखना चाहता, वह सिर्फ उसकी कमियां ढूंढता है। इससे उसकी खुद की घटिया सोच का पता चलता है। छोटे और घटिया लोग नुकसान झेल लेते हैं। महान लोगों के लिए खतरा बहुत बड़ा है। छिपकली की कटी उंगली वापस आ जाती है पर इंसान की नहीं।

Free Souls

यह हमेशा की कहानी है। जब आदमी अपना घर बना लेता है तब उसे समझ आता है कि उसने क्या गलती की। तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। हर काम पूरा होने के बाद एक उदासी छा जाती है। मुसाफिर तुम कौन हो? तुम्हारी आंखों में दुख है। क्या चाहिए तुम्हें? यहां आराम करो। मुसाफिर कहता है, मुझे आराम नहीं चाहिए। मुझे एक और मुखौटा दो। एक दूसरा मुखौटा। दुखी लोग जब खुश होते हैं तो वे अपनी खुशी का गला घोटने लगते हैं। वे जलन में ऐसा करते हैं क्योंकि उन्हें पता है कि यह खुशी जल्द ही उन्हें छोड़कर भाग जाएगी। क्या वह पीछे हट रहा है? हां, पर तुम उसे गलत समझ रहे हो? वह पीछे इसलिए हट रहा है ताकि एक लंबी छलांग लगा [संगीत] सके। मुझे खुद पर कभी यकीन नहीं रहा। मुझे खुद को जानने के विचार से ही नफरत है। मैं अपने बारे में कुछ भी पक्का मानने से डरता हूं। शायद यह मेरी नस्ल की ही कोई पहेली है। आजकल एक शांत आदमी अचानक पागल हो जाता है। वह टेबल उलट देता है और चिल्लाता है। उसे इस घटिया जमाने के साथ एक ही थाली में खाना पसंद नहीं है। उसे उल्टी आती है। हम सब ऐसे टेबल पर बैठ गए हैं जहां हमें नहीं होना चाहिए था। इसी को खाने के बाद की उल्टी कहते हैं। तारीफ सिर्फ वहां करो जहां तुम सहमत नहीं

हो। अगर तुम अपनी पसंद की चीज की तारीफ करोगे तो तुम असल में खुद की ही तारीफ कर रहे हो। यह बहुत घटिया बात है। लेकिन गधे इस बात को नहीं समझते। उन्हें लगता है कि तुम उनकी तारीफ कर रहे हो तो [संगीत] तुम उनके दोस्त हो। बड़ी शांति में जियो। अपनी भावनाओं के मालिक बनो। कभी उन्हें घोड़े की तरह इस्तेमाल करो तो कभी गधे की तरह। अपनी आंखों पर काला चश्मा चढ़ा लो ताकि

कोई तुम्हारे इरादे ना पढ़ सके। अकेलेपन को अपनी खूबी बनाओ। समाज में रहने से आदमी मामूली बन जाता है। बड़े विचार तारों की रोशनी जैसे हैं। उन्हें हम तक पहुंचने में सदियां लग जाती हैं। जब तक वे पहुंचते हैं लोग उनके होने से ही इंकार कर देते हैं। एक महान दिमाग को समझने में सदियां लग जाती हैं। यहां नजारा खुला है और दिमाग ऊंचा लेकिन एक दूसरा आदमी भी है जो ऊंचाई पर है पर वह वहां से नीचे देखता है। आज के इस घटिया और मामूली जमाने में नेक शब्द का क्या मतलब बचा है? हम इसे कैसे पहचाने? किसी के काम से उसकी असलियत पता नहीं चलती क्योंकि काम हमेशा उलझे हुए होते हैं। कला या पढ़ाई लिखाई से भी इसका पता नहीं चलता। आजकल कई कलाकार और विद्वान नेक दिखने की कोशिश करते हैं। पर यह कोशिश ही बताती है कि उसमें इसकी कमी है। असली बात काम नहीं बल्कि यकीन है। ऊंचे दर्जे का फैसला एक बुनियादी भरोसे से होता है। एक नेक आत्मा के अंदर खुद को लेकर एक पक्का यकीन होता है। इसे कहीं ढूंढने की जरूरत नहीं पड़ती। एक नेक आत्मा खुद की इज्जत करती है। कुछ लोग पैदाइशी दिमाग वाले होते हैं। वह चाहे जितना छुपने की कोशिश करें उनकी आंखों से सच बाहर आ ही जाता है। खुद को बेवकूफ दिखाने का सबसे अच्छा तरीका जोश दिखाना है। आम जिंदगी में बेवकूफ दिखना उतना ही जरूरी है जितना बारिश में छाता। लोग इसी जोश को अक्सर नेकी समझ लेते हैं। अकेले रहने वाले इंसान की बातों में जंगल की गूंज होती है। जो साल भर अपनी आत्मा के साथ गुफा में बंध रहा हो उसके विचार थोड़े अजीब और डरावने हो जाते हैं। वह नहीं मानता कि किसी फिलॉसफर ने अपनी असली और आखिरी बात कभी किताबों में लिखी होगी। किताबें तो असल में सच को छिपाने के लिए लिखी जाती हैं। हर गुफा के पीछे एक और गहरी गुफा होती है। हर विचार के नीचे एक और गहरी खाई होती है। हर फिलॉसफी सिर्फ सामने का पर्दा है। हर शब्द एक मुखौटा है। एक गहरा सोचने वाला गलत समझे जाने से नहीं डरता। उसे डर लगता है सही समझे जाने से।

गलत समझना उसकी शान को चोट पहुंचाता है। पर सही समझना उसके दिल को दुख देता है। वह सोचता है अरे तुम भी वही दुख क्यों झेल रहे हो जो मैं झेल रहा हूं। इंसान एक बहुत ही चालाक और पेचीदा कॉम्प्लेक्स जानवर है। उसने साफ जमीर उसने गुड कॉन्शियस का आविष्कार इसलिए किया ताकि वह खुद को सीधा साधा महसूस कर सके। पूरी की पूरी मोरलिटी पूरी की पूरी नैतिकता एक बहुत बड़ा और हिम्मत वाला झूठ है। इसी झूठ की वजह से इंसान अपनी आत्मा को देखकर खुश हो पाता है। फिलॉसफर वह आदमी है जो हमेशा अजीब और अनोखी चीजें देखता सुनता है। उसके विचार उस पर बिजली की तरह गिरते हैं। वह खुद एक तूफान है जिसके अंदर से नई बिजलियां पैदा होती हैं। वह अक्सर खुद से भागता है और खुद से डरता भी है। पर उसकी जिज्ञासा [संगीत] उसे हमेशा वापस अपने पास ले आती है। जो आदमी अपनी बात पर टिका रहे जो अपनी तलवार और गुस्से का मालिक हो और जिसके सामने कमजोर लोग खुद झुक जाए वही असली मास्टर है। जब ऐसा ताकतवर आदमी हमदर्दी दिखाए तो उसकी कोई वैल्यू है। लेकिन आजकल के दुखी और रोतलू लोगों की हमदर्दी बेकार है। पूरे यूरोप में दर्द को लेकर एक बीमार किस्म की चिड़चिड़ाहट फैल गई है। लोग शिकायत करने को ही अपनी महानता समझने लगे हैं। यह नामदानगी है। इसे पूरी तरह बंद करना होगा। अपने गले में मस्त ज्ञान गे साइंस का ताबीज पहन लो ताकि इस रोतलू कल्चर से बच [संगीत] सको। हॉर्ब्स जैसे अंग्रेजों ने हंसी को बुरा बताया। पर मैं फिलॉसफरों का दर्जा उनकी हंसी की क्वालिटी से तय करूंगा। जो सुनहरी हंसी गोल्डन लाफ्टर हंस सके वही सबसे ऊपर है। मुझे यकीन

है कि भगवान भी फिलॉसफी झाड़ते होंगे और वह सब सीरियस चीजों का जमकर मजाक उड़ाते होंगे। भगवानों को मजाक बहुत पसंद है। मैं जिस भगवान की बात कर रहा हूं वह है डायोनिसस। वह एक लुभाने वाला भगवान है। वह खुरदरी आत्माओं को भी आईने की तरह साफ [संगीत] कर देता है। वह कीचड़ में दबे सोने को पहचान लेता है। उसके संपर्क में आने वाला हर इंसान खुद को और भी नया और अमीर महसूस करता है। वह कहता है मुझे इंसान पसंद है। मैं उन्हें और भी मजबूत और भी बुरा और भी गहरा बनाना चाहता हूं। यह सुनकर शायद आपको डर लगे। पर वह अपनी जादुई मुस्कान के साथ यह बातें कहता है। सच तो यह है कि कभी-कभी देवताओं को भी हम इंसानों से कुछ सीखना चाहिए। आखिर हम इंसान ज्यादा इंसान ही हैं। अफसोस मेरे लिखे हुए विचार अब पुराने लग रहे हैं। कुछ समय पहले यह कितने रंगीन शरारती और कांटों से भरे थे। इन्हें पढ़कर हंसी आती है। पर अब यह हुबाऊ सच्चाई बनते जा रहे हैं। हम सिर्फ उन्हीं चीजों को लिख या पेंट कर सकते हैं जो अब खत्म होने वाली है। यह मुरझाई हुई यादें हैं। मेरी पुरानी और प्यारी बुरी सोच। तुम अब वैसी नहीं रही जैसी सुबह के वक्त अकेली गुफा में ताजा और अनोखी थी। यह मेरी जिंदगी का दोपहर है। मजे का मौसम। यह मेरा समर पार्क है। मैं बेचैनी से दोस्तों का इंतजार कर रहा हूं। मैं दिन रात तैयार हूं। मेरे दोस्तों, तुम कहां रह गए? सही वक्त आ गया है। क्या आज यह सफेद पहाड़ तुम्हारे लिए नहीं सजे। यह झरना, हवा और बादल तुम्हें ढूंढ रहे हैं। वे आसमान की ऊंचाई तक जोर लगा रहे हैं ताकि बाज की नजर से तुम्हें देख सके। मैंने तुम्हारे लिए ऊंचाई पर मेज सजाई है। यहां सितारे भी पास हैं और नीचे का गहरा गड्ढा भी। मेरा इलाका बहुत बड़ा है। बताओ मेरा शहद किसने चखा है? दोस्तों, तुम आ गए? पर अफसोस मैं वो नहीं हूं जिसे तुम ढूंढ रहे हो। तुम मुझे घूर रहे हो। गुस्सा हो जाओ वह बेहतर है। क्या मैं अब मैं नहीं रहा? मेरा हाथ चेहरा सब बदल गया। क्या अब मैं तुम्हारा दोस्त नहीं रहा? क्या मैं कोई और बन गया हूं? क्या मैं खुद के लिए अजनबी हूं? मैं खुद से ही लड़ने वाला पहलवान हूं। मैं अपनी ही ताकत को रोकता हूं। मैं अपनी ही जीत से जख्मी और परेशान हूं। मैं वहां गया जहां सबसे तेज हवा चलती है। मैंने अकेले बर्फ के पहाड़ों पर रहना सीखा। जहां कोई इंसान नहीं रहता। मैंने इंसान, भगवान, प्रार्थना और श्राप सब भुला दिया। मैं बर्फ के पहाड़ों पर भटकने वाला एक भूत बन गया हूं। मेरे पुराने दोस्तों देखो तुम डर से पीले पड़ रहे हो। यहां से चले जाओ। पर गुस्सा मत होना। तुम यहां नहीं रह पाओगे। यहां पहाड़ों और बर्फ के बीच रहने के लिए शिकारी बनना पड़ता है।
यहां पहाड़ी हिरण की तरह उड़ना पड़ता है। क्या मैं एक बुरा शिकारी था? देखो मेरा धनुष कितना खींचा हुआ है। जो इतनी तेज तीर छोड़े वो सबसे मजबूत होगा। पर यह तीर बहुत खतरनाक है। जाओ अपने सुरक्षित घर लौट जाओ। तुम जा रहे हो। ए दिल तूने बहुत सहा है। तेरी उम्मीद बहुत मजबूत थी। अब नए दोस्तों के लिए दरवाजे खोल दे। पुरानों को जाने दे। यादें मिटा दे। पहले तुम जवान थे। अब तुम और भी जवान हो। जो चीज हमें जोड़ती थी, वह उम्मीद का धागा अब टूट रहा है। वह प्यार जो कभी लिखा गया था अब धुंधला हो गया है। यह एक पुराने कागज जैसी है। इसे छूने में हाथ कांपते हैं। यह सूखे पत्तों जैसी कड़कड़ा रही है। अब तुम दोस्त नहीं रहे। तुम तो बस परछाइयां हो। तुम रात को मेरे दिल की खिड़की खटखटाते हो। मुझे देखते हो और कहते हो हम कभी दोस्त थे। यह शब्द अब मुरझाए गुलाब जैसे हैं। जवानी की वह तड़प जो समझ नहीं आती थी। मैं उन लोगों के लिए तड़पा जिन्हें मैं अपना समझता था। पर वे बूढ़े हो गए और खत्म हो गए।

अब मेरी दुनिया में सिर्फ नए लोग ही रहेंगे। यह मेरी जिंदगी का दोपहर है। मेरी दूसरी जवानी। यह मेरा समर पार्क है। मैं नए दोस्तों का इंतजार कर रहा हूं। दिन रात तैयार हूं। आओ जल्दी आओ। सही वक्त आ गया है। यह गाना खत्म होगा। यह एक दुख भरी चीख थी। इसे एक जादूगर ने बनाया है। वह मेरा दोपहर का दोस्त है। मत पूछो वह कौन है? यह दोपहर का वक्त था जब एक से दो बने। हम अपनी दावत मना रहे हैं। हमारा मकसद एक ही है। मेहमानों का मेहमान दोस्त जर थूस आ गया। अब दुनिया हंस रही है। वो डरावना पर्दा फट गया। आज उजाला और अंधेरा एक हो गए हैं। ओम